



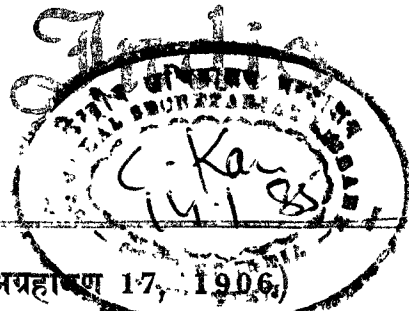
भारत

का

राजपत्र

The Gazette of

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



सं० 49] नई दिल्ली, शनिवार, दिसम्बर 8, 1984 (अग्रहायण 17, 1906)
No. 49] NEW DELHI, SATURDAY, DECEMBER 8, 1984 (AGRAHAYANA 17, 1906)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय सूची

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
833	भाग I—खंड 1—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	भाग II—खंड 3—उप-खंड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधिया भी शामिल हैं) के हिन्दी में प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खंड 3 या खंड 4 में प्रकाशित होते हैं)
1487	भाग I—खंड 2—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) द्वारा जारी की गयी सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	*
—	भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश
1931	भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गयी सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	भाग III—खंड 1—उच्चतम न्यायालय, महान्यायाधीश, संघ लोक सेवा आयोग, रेलवे प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों पर जारी की गई अधिसूचनाएं
*	भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	भाग III—खंड 2—पेटेंट कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं और नोटिस
*	भाग II—खंड 1—क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
*	भाग II—खंड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं
*	भाग II—खंड 3—उप-खंड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*
*	भाग II—खंड 3—उप-खंड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	भाग III—खंड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं
*		भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्ति और गैर-सरकारी निकायों द्वारा विज्ञापन और नोटिस
*		भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में अमल और मृतक के आकड़े को दिखाने वाला अनुपूरक

*पृष्ठ संख्या प्राप्ति नहीं हुई।

CONTENTS

	PAGES		PAGES
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) ..	833	PART II—SECTION 3—Sub-Sec. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) on General Statutory Rules & Statutory Orders (including bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administrations of Union Territories) ..	*
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) ..	1487	PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence ..	*
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence ..	—	PART III—SECTION 1—Notifications issued by the Supreme Court, Auditor General, Union Public Service Commission, Railways Administrations, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India ..	29349
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence ..	1931	PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, Calcutta ..	987
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations ..	*	PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners ..	221
PART II—SECTION 1-A—Authoritative text in the Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations ..	*	PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies ..	2995
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills ..	*	PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies ..	183
PART II—SECTION 3—Sub-Sec. (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) ..	*	PART V—Supplement showing statistics of Birth and Deaths etc, both in English and Hindi ..	*
PART II—SECTION 3—Sub-Sec. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) ..	*		

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के अंशालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बंधित अधिसूचनाएँ

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति मंत्रिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 23 नवम्बर, 1984

सं० 115-प्रज/84—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को “मर्त्योत्तम जीवन रक्षा पदक प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं।

1. श्री रमेश,
एच-2/686,
जहाँगीरपुरी,
दिल्ली 1

4 सितम्बर, 1984 को लगभग 10 वर्षीय श्री रमेश जहाँगीरपुरी स्थित अपने घर वापस जा रहा था। जब वह आनन्द पर्वत (मराय रोडिल्ला) में रेलवे फ्लाई ओवर के नीचे से गुजर रहा था, उसने एक बूढ़ी महिला को रेल मार्ग पर चलते हुए देखा जो एक आती हुई ट्रेन से बिलकुल बेखबर थी जिससे उसकी जान का प्रत्यक्ष खतरा था। वह तुरन्त दौड़ा और उसने उक्त बूढ़ी महिला को ट्रेन के नीचे कुचले जाने से बचाने के लिए रेल मार्ग से बाहर हटा दिया। लेकिन इस कार्रवाई में वह स्वयं अपने को उस पटरी से बाहर नहीं कर सका जिस पर ट्रेन आ रही थी और इस प्रकार गंभीर रूप से घायल हो गया। उसने अपनी दाहिनी बाजू खाँसी और उसके शरीर पर गंभीर चोटें आईं।

श्री रमेश ने एक बूढ़ी महिला की जान बचाने में स्वयं अपनी जान के बहुत बड़े खतरे की परवाह न करते हुए बड़ी सूझबूझ उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

2. बाबा अजीत सिंह,
गांव भरनीवाला,
पाना भाबू,
जिला फिरोजपुर।

19 नवम्बर, 1983 को बाबा अजीत सिंह, भाबू निवासी किर्मी एक श्री हरबंस लाल भाटिया के साथ घूमते-सरे से मोगा जा रही एक बस में सफर कर रहे थे। तदनंतर से लगभग डेढ़ किलोमीटर सफर करने के बाद एक युवक ने अपना रिवाल्वर ड्राईवर के सिर पर रखा और उसे बस रोकने का संकेत किया। कुछ ही अगो में बहुत से आतंकवादी रिवाल्वर, स्टेनगन और पिस्तौलें ताने हुए खड़े हो गये और उन्होंने बस के अगले और पीछे के दरवाजे पर मोर्चा संभाल लिया। आतंकवादियों ने हिन्दू यात्रियों को लूटना शुरू कर दिया और उन्होंने उनकी नकदी और बहुमूल्य वस्तुएँ लूट लीं। आतंकवादियों ने कम्पार्ट का खपों का पैला छीन लिया और उसे गाल मार दी। नौबेरा और पन्थुआ के नजदीक बस को रोक दिया और वापस लाया गया। चार हिन्दुओं को बस से बाहर धसीटा गया और उन्हें एक-एक करके गोली मार दी गयी। जब आतंकवादियों ने श्री हरबंस लाल की लाश की पहली मापी तो उसने वह तुरन्त दे दी। बाबा अजीत सिंह ने यह कहते हुए हस्तक्षेप किया कि श्री हरबंसलाल उनके पुत्र की तरह हैं। इस पुकार को धन्यस्वी कर दिया गया और आतंकवादियों में से एक ने अपनी बन्दूक के बट से श्री हरबंस लाल के सिर पर चोट मारी जिससे खून

बहने लगा। जब बाको चार यात्रियों को बाहर धसीटा जा रहा था, बाबा अजीत सिंह ने श्री हरबंस लाल की कग कर गले लगा लिया और वे दया की याचना करने लगे। इस पर एक हत्यारे को दया आ गई और श्री हरबंस लाल को छोड़ दिया गया।

इस प्रकार, बाबा अजीत सिंह ने उत्कृष्ट साहस और सूझबूझ का परिचय देते हुए और स्वयं अपनी जान के बहुत बड़े खतरे की परवाह न करते हुए आतंकवादियों के जुगल से हिन्दू यात्री की जान बचाई।

सं० 116-प्रज/84—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को “उत्तम जीवन रक्षा पदक” प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री रघबीर सिंह,
कांस्टेबल न० 596 एच० एम० आर०,
ग्राम मारखेड़ो,
थाना साम्बला,
जिला राहूतक (हरियाणा)।

3 जुलाई 1981 का डा जड़क रमेश कुमार और नरिन्दर कुमार स्थानीय कुएं से नहाने के लिए गये। वे रस्ती की मदद से कुएं में नीचे उतरे। स्नान करने के बाद जब वे रस्ती की मदद से कुएं से बाहर आ रहे थे तो वे अपना संतुलन खो बैठे और कुएं में गिर पड़े। और मचाने पर उसी गांव के निवासी श्री राज और श्री ईश्वर घटना स्थल पर तुरन्त पहुंच गये। वे कुएं में नीचे उतर गये जहां वे लड़के बेहोश होने लगे थे और उनसे रस्ती की पकड़ भी छूटती जा रही थी और उन पर जहरीली गैस का भी प्रभाव हो गया था। कांस्टेबल रघबीर सिंह जो अपने गांव से छुट्टी पर गये हुए थे उक्त स्थल पर आये और उन्होंने चार व्यक्तियों को अपने जीवन के लिए संघर्ष करने हुए देखा। कुएं में जहरीली गैस होने के बारे में श्री राज तथा श्री ईश्वर द्वारा चेतावनी दिये जाने के बावजूद कांस्टेबल रघबीर सिंह चार व्यक्तियों का जीवन बचाने के द्वाारा से उतरे कुएं में नीचे उतर गये। कांस्टेबल रघबीर सिंह ने श्री ईश्वर और श्री राज को कुएं से बाहर निकालने में कुएं के अन्दर उन्हें सहाय देते हुए गांव वालों की मदद की परन्तु वे दो लड़कों की जान नहीं बचा सके। वे स्वयं भी कुएं में डूब गये क्योंकि कुएं में जहरीली गैस होने के कारण वे बेहोश हो गये थे।

कांस्टेबल रघबीर सिंह ने स्वयं अपने जीवन के भागी खतरे की परवाह न करते हुए अदम्य साहस, तत्परता तथा कन्य परायणता का परिचय दिया।

2. श्री गुलाम हुसैन पाठव,
नव कांडेल,
श्रीनगर,
जम्मू व कश्मीर।

11 अप्रैल, 1982, को श्रीनगर के मौसमी शास व्यापारी श्री गुलाम हुसैन पांडव अपने ग्राहकों से रुपये वसूल करने आये थे और बी० एस० शाह रोड, कलकत्ता में कालावागान बस स्टॉप पर प्रतीक्षा कर रहे थे। इस बीच श्री ब्रजिका शाह के निवाम-ब-मिट्टी के तेल की दुकान में भीर साथ लगी श्री मिसिर चौधरी की पंसारी व लेखन सामग्री की दुकान में आग लग गई। इस दुखद दृश्य ने गुलाम हुसैन का ध्यान आकर्षित किया और वे तुरन्त घटनास्थल पर पहुँचे। उन्होंने देखा कि जलत शाह के बड़े छोटे बच्चे जलती हुई इमारत में फंसे गये और बबसी में चीख रहे थे। श्री पांडव जलने हुए सफाई में तुरन्त कूद पड़े और उन्होंने बच्चों का सुरक्षित बाहर निकाल लिया। लेकिन जलने के कारण स्वयं उनके शरीर पर गंभीर जखम हो गये। उन्हें इलाज के लिए एम० आर० बंगुर अस्पताल में ले जाया गया जहाँ जखमों के कारण उनकी मृत्यु हो गयी।

श्री गुलाम हुसैन पांडव ने स्वयं अपने जाना के भारी खतरे की परवाह न करते हुए वो बच्चों का जीवन बचाने में अनुकरणीय साहस, तत्परता और निस्वार्थपरता का परिचय दिया।

3. श्री मवतिपरमबिल आसेफ, अग्रस्ताईन, (मरणोपरान्त)
पुत्र श्री ओसेफ,
मवतिपरमबिल हाऊस,
इडलकारा, अलवाय,
जिला, इनाकुलम (केरल)।

26 नवम्बर, 1981, को इनाकुलम जिले में अगामाले से मंजारा जा रही "कविता" नामक बस का ड्राईवर, जिसमें लगभग 40 सवारियाँ थीं, बस का संतुलन खो बैठा और बस कारिगली पादम में सड़क के किनारे बिजली के खम्भे से टकरा गई। दुर्भाग्यवश बस सड़क के किनारे घान के खेत में उलट गई। श्री अग्रस्ताईन ने, आ किसी तरह बस से बाहर निकल गये थे बस से कुछ यात्रियों को बाहर खींचा। उन्होंने उस समय ड्राईवर को जो भारी झटके से अपनी सीट और स्टीरिंग व्हील के बीच फंसा गया था, पत्थर के टुकड़े से बस के सामने के शीशे को तोड़कर बचाने की कोशिश की। बस से टकरा कर बिजली के खम्भे का ऊपर का हिस्सा टूट गया था और गर्म तार उस स्टे तार को छू रही थी जो घान के खेत में पानी को छू रहा था। श्री अग्रस्ताईन पानी को छू रहे गर्म स्टे तार से उत्पन्न खतरे से अनभिज्ञ थे। ड्राईवर को बचाने की इस प्रक्रिया में अचानक उनका पैर घान के खेत में पानी में पड़ गया और बिजली छूने से उनकी मृत्यु हो गई। मरते समय उन्होंने चिल्लाकर बिजली की शाटिंग के बारे में यात्रियों को बताया जिससे घाय्य यात्री पानी के सम्पर्क में आने से बच गये।

श्री अग्रस्ताईन ने स्वयं अपने जीवन के भारी खतरे की परवाह न करते हुए कई व्यक्तियों की जान बचाने में उत्कृष्ट साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

4. मास्टर अलीकंद अजद खा,
अलीकंद कलपेनी द्वीप,
लक्षद्वीप,
कावारत्ती।

25 फरवरी, 1983, को 5 वर्षीय बालक मास्टर अजद खा और 7 वर्षीय बालक मास्टर माहम्मद रफीक जी० के० 15 फुट गहरे कुएं की मेंढ पर बैठे हुए थे। संयोग से मास्टर रफीक फिसल गया और कुएं में गिरने ही वाला था। मास्टर अजद खा पलभर में उसके पीस पहुँच गया और उसे एक हाथ से पकड़ लिया। इस प्रक्रिया में मास्टर खा को अपना एक पैर कुएं की मेंढ के बाहर रखकर तथा दूसरा पैर अन्दर रखकर कुएं के भीतर लटकना पड़ा। मास्टर खा अपने जीवन का खतरा मोल लेकर, क्योंकि छोटा होने के कारण वह कुएं में गिर सकता था, कुएं में लटकते हुए मास्टर रफीक को मजबूती से पकड़े रखा।

इसी स्थिति में मास्टर खा ने महायता के लिए आस-पास के लोगों को आकर्षित करने के लिए चिल्लाना शुरू कर दिया। पास ही स्थित मस्जिद में मौजूद लोग तुरन्त घटनास्थल पर पहुँच गये और उन्होंने मास्टर मोहम्मद रफीक को बचा लिया।

मास्टर अजद खा ने अपने स्वयं जीवन के भारी खतरे की परवाह न करते हुए सूझ-बूझ, साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

5. श्री दगदे रमेश हरिभाऊ,
पुत्र श्री हरिभाऊ नीवाजी दगदे, (मरणोपरान्त)
जनता नगर, नवी खडकी,
पुणे-6 (महाराष्ट्र)।

24 जुलाई, 1982, को पुणे के नवी खडकी क्षेत्र में पसारी की दुकान में आग लग गई थी। आग निकटवर्ती भोंपड़ियों की ओर फैल रही थी जिनमें याकूब शेख और चार सदस्यों का उसका परिवार गहरी नींद में सो रहे थे। इसकी कक्षा के छात्र श्री रमेश दगदे से पिछला दरवाजा तोड़कर खोल दिया और याकूब शेख तथा उसके परिवार को बचा लिया। वह फ्यूज को हटाने के लिए भोंपड़ी में वापस लौट आया परन्तु दुर्भाग्यवश उन्हें बिजली से छू लिया और उनकी मृत्यु हो गई।

श्री दगदे रमेश हरिभाऊ ने आग से चार व्यक्तियों का जीवन बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया और उक्त कार्य में स्वयं अपनी जान गंवा दी।

6. कुमार चन्द्रशेखर मधुकर कलसेकर,
किसान नगर नं० 2, चैतन्य निवास,
वागले एस्टेट,
धाने, तालुका तथा जिला धाने (महाराष्ट्र)।

19 फरवरी, 1979 को जब जयश्री (5 वर्ष) शौचालय गई हुई थी, वह अचानक म्युनिसिपल शौचालयों के शौचालय टैंक सीवेज (डब्ल्यू० सी०) में गिर गई। बालिका ने शौचालयों का प्रयोग करने के बजाय डब्ल्यू० सी० टैंक के किनारे पर बैठना पसंद किया था और मूत्र से भरा हुआ था और वह उसमें फिसल गई। बालिका की चीख सुनकर कुमार चन्द्रशेखर तुरन्त घटना स्थल पर पहुँच गये और बिना किसी हिचकिचाहट के 7'-6" गहरे सीवेज टैंक में घुस गये। वह जयश्री का हाथ पकड़ने में सफल हो गये और उन्होंने उसे डब्ल्यू० सी० टैंक से बाहर खींच लिया। उसके बाद जयश्री को वागले एस्टेट में डा० पी० टी० कंसल के क्लिनिक में ले जाया गया जहाँ वह इलाज के बाद ठीक हो गई।

कुमार चन्द्रशेखर मधुकर कलसेकर ने अपने जीवन का खतरा मोल लेकर एक बालिका को सीवेज टैंक में डूबने से बचाने में साहस, तत्परता तथा कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

7. मास्टर राहुल प्रमोद उधोजी,
"स्नेहल" खरे टाउन घमंपीठ,
नागपुर (महाराष्ट्र)।

5 मई 1982, को कुछ लड़के रामदास पेंठ, नागपुर में हमवास हाई स्कूल के तैरने के तालाब में तैरने का आनन्द ले रहे थे। अचानक एक लड़का तुषार मुले (आयु 15 वर्ष) तालाब में नीचे गिर गया क्योंकि वह तैरना नहीं जानता था। वह तैरने के तालाब की तली में पड़ा रहा और हर लड़का यह सोचकर तालाब से बाहर आ गया कि उक्त लड़का डूब गया है। इस नाजुक संकटकाल में 11 वर्षीय छोटा राहुल प्रमोद उधोजी यह महसूस करते हुए कि उक्त लड़का डूब जायेगा। उसे बचाने के कार्य के लिए तैयार हो गया। वह ड्रेसिंग रूम में बौझ पड़ा जहाँ वह घर जाने के लिए अपने कपड़े बदल रहा था और तालाब में कूद गया। उसने तुषार मुले को बालों से पकड़े लिया और कुछ ही क्षणों में उसे बाहर निकाल लिया। मुले अभी तक सांस ले रहे। प्राथमिक उपचार करने के बाद वह होश में आ गया।

15 मई, 1982 को श्री राहुल ने अपने जीवन के खतरे को महसूस न करते हुए उसी तालाब से एक अन्य लड़के श्री अभिजीत बैद्य को डूबने से बचाया।

इस प्रकार मास्टर राहुल प्रमोद उधारी ने अपने जीवन के भारी खतरे की परवाह न करते हुए दूसरी हुई वी जाने बचाने में साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

8. श्री हमगेहकीमा,
हमुनपुरी (बेनेबेर),
महिजोल,
मिजोरम।

27 दिसम्बर, 1982 का पू. कपथगा के मकान में आग लग गई। पू. कपथगा और उसकी पति मकान में अपने तीन बच्चों को छोड़कर रात को अपने झूम में ठहर रहे। दुर्घटना के समय केवल दो बच्चे मकान में थे। वे बाहर नहीं आ सके क्योंकि मुख्य द्वार पर आग लगी हुई थी। खिड़कियां इतनी ऊंची थी कि उनसे बाहर कूदना बच्चों के लिए असम्भव था।

बच्चों की भीखें सुनकर हमगेहकीमा यह देखने गये कि क्या हां रहा है। उन्होंने मकान में आग लगी हुई देखी। उन्होंने मकान के अन्दर कूदने का प्रयास किया परन्तु अमहाय गर्मी के कारण उन्हें पीछे हटना पड़ा। इसलिए उन्होंने अपना बाघ उठाया और किसी तरह से दीवार को काटते हुए उसमें छेद बनाया और बच्चों को बाहर निकाल लिया और इस प्रकार उनकी जान बचा ली। बच्चों को बचाते समय वे बुरी तरह जल गये और उन्हें अस्पताल में दाखिल किया गया जहां उनका इलाज दो सप्ताह से अधिक समय तक होना रहा।

श्री हमगेहकीमा ने स्वयं अपने जीवन के भारी खतरे की परवाह न करते हुए जलते हुए मकान से दो बच्चों की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

9. श्री बीरेन्द्र सिंह,
पुत्र श्री जौत सिंह,
गांव भुट्टां, पांचाली पट्टी, लाहाना,
तहसील कर्णप्रयाग,
जिला-चमोली (उत्तर प्रदेश)।

11 अगस्त, 1982 को श्री ज्ञानसिंह तहसील कर्णप्रयाग में दाहिम ढाली में रामगंगा नदी की तेज धार से बह गया। पहाड़ी घाटी होने के कारण इसमें सख्त और नोकदार चट्टानें होती हैं और कभी-कभी बड़-बड़े तैराक भी इन बाधाओं में फंस जाते हैं। ऐसी अटिल परिस्थितियों में श्री बीरेन्द्र सिंह ने साहस और मानवीय भावना का परिचय दिया। वे 1/2 किलोमीटर तक रामगंगा नदी में तैरे और उन्होंने श्री ज्ञानसिंह की जान बचा ली।

इस प्रकार श्री बीरेन्द्र सिंह ने अपने जीवन का भारी खतरा मॉल लेकर नदी में डूबने से एक व्यक्ति की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

10. श्री कुजुमान उर्फ जॉन,
फिलीपोज,
चिरक्का क्यू हाऊम, पाइनाब कांट्याम मुरी,
गांव पाइनाब, बेंगानुर तालुक,
जिला-मल्लेपी (केरल)।

27 जुलाई, 1983 को लिजी नामक एक 11 वर्षीय लड़की जिला मल्लेपी में आदिचिकन्दम देवी के मन्दिर के पास घाट पर स्नान करते समय अकस्मात् पम्पा नदी में फिसल गई। लड़की को लगभग डूबते हुए देखकर उसकी दो चाणियों थंरम्मा और वलसम्मा ने जो उसी घाट पर स्नान कर रही थी, उसे बचाने का प्रयास किया परन्तु असफल रहें। अपने प्रयास में वे तब तक गिर गईं और वे अभी दोनों पानी से लगभग डूबने लगी। उस जगह पर पानी की गहराई लगभग 20

फुट थी और नदी की तलहटी में कीचड़ था। एक महिला की विलाहट सुनकर जो किनारे पर थी, जॉन फिलीपोज जो दूसरे घाट पर स्नान कर रहे थे, तुरन्त घटनास्थल पर पहुँच गये। उस समय तक सभी तीन महिलाओं की पानी की तेज धार बहाकर दूर से गई थी। जॉन फिलीपोज अपने जीवन के खतरे की परवाह न करते हुए नदी में कूद गये और थंरम्मा की धार तैरे और उन्होंने उसे बांधों से पकड़ लिया। परन्तु तभी वलसम्माने उनको जकड़ लिया और जॉन फिलीपोज दोनों महिलाओं सहित पानी में डूबने लगे। इस संकट काल में बड़ी सुझसूझ से काम लेते हुए जॉन फिलीपोज ने वलसम्मा को ठोकर से झटका कर अलग कर दिया। इस प्रकार मुक्त होकर उसने पहले थंरम्मा को बचाया और उसके बाद वलसम्मा को बचाया। इस समय तक लड़की सिजी नदी की कीचड़ वाली तलहटी में डूब चुकी थी। जॉन फिलीपोज ने अपनी टांगों से उसका पता लगाया और उसे कीचड़ से निकाला और उसकी भी जान बचा ली।

श्री कुजुमान उर्फ जॉन फिलीपोज ने स्वयं अपने जीवन के खतरे की परवाह न करते हुए डूबते हुए तीन व्यक्तियों की जान बचाने में साहस, सूझसूझ और तत्परता का परिचय दिया।

11. श्री सुन्दर धिउरिया,
गांव झोंडगा,
धाना बोईपारी गुडा,
जिला-कोरानपुर (उड़ीसा)।

18 अगस्त, 1983 को जिला कोरानपुर में कोल्लाव नदी के ओडगा नौका घाट की नौका तजधार के कारण उलट गयी और पाँच महिला यात्री डूबने लगी और उन्हें नदी की तेज लहर बहा ले गई। उस समय, श्री सुन्दर धिउरिया ने जो नदी के किनारे पर बैठे थे और मछली पकड़ रहे थे यह देखा और तत्काल नदी में कूब गये। उन्होंने पहले उन दो महिलाओं को बचाया जो किनारे के तजधीक थी। उन्होंने अन्य तीन महिलाओं को अवचेमन स्थिति में एक दूसरे से निपटी हुई और नदी की तेजधार में बहते हुये देखा। उस स्थान पर जहा पर नौका उलटी थी, नदी की गहराई लगभग 15 से 20 फुट तक थी। श्री धिउरिया पानी की नीचे तैरते हुए डूबती हुई महिलाओं के पास पहुँचे। उन महिलाओं में से एक ने उनका हाथ पकड़ लिया और दूसरी ने उसकी लंगोट पकड़ ली और तीसरी उनकी गर्दन पकड़े हुए उनकी पीठ पर बैठ गयी। इससे स्थिति और अधिक सकटपूर्ण हो गई और उसका जीवन भी खतरे में पड़ गया। वे बड़ी कठिनाई से एक हाथ से तैरते हुए सभी तीन महिलाओं को किनारे पर ले आये।

श्री सुन्दर धिउरिया ने अपने जीवन का भारी खतरा मॉल लेकर डूबती हुई पाँच महिलाओं की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

सं० 117-अज/84—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का महर्ष अनुमोदन करते हैं:—

1. श्री बलियम्बरा पुत्तु सोईदीन, (मरणोपरांत)
मार्फत श्रीमती श्रीपीट्टाम्मल,
पयुम्मा उम्मा,
श्रीपीट्टाम्मल, पी० ओ०, मोक्कम,
कोजीकोड जिला केरल।
2. श्री अम्बलकडी अन्दुल गफुर,
अम्बलकडी, चेन्नमंगलूर वेशम,
थजाकोडे गांव,
पी०ओ० चेन्नमंगलूर,
कोजीकोड जिला केरल।

15 जुलाई, 1982 को एक देशी नाव, जिसमें 18 व्यक्ति सवार थे, कोजीकोड जिला में जिनियार नदी (इरावडी पुजा) के भीषण-बोझ उलट गई। वरसात का मौसम था, इसलिए नदी में बाढ़ आई हुई थी और नदी की

धारा तेज थी। नदी में गिरे सभी यात्री जीवन के लिए संघर्ष करने लगे। उन यात्रियों में श्री बी० पी० मोईदीन भी थे जिन्हें तैरना आता था। श्री मोईदीन तैरकर सुरक्षित आ सकते थे किन्तु उन्होंने आग्रहा नाम की एक महिला और उसके 2½ वर्षीय बच्चे मास्टर इरशाद की नदी में जीवन के लिए संघर्ष करते हुए देखा। श्री मोईदीन ने उन्हें पकड़कर पानी के ऊपर रखते हुए उनकी जान बचाने का साहसिक प्रयत्न किया परन्तु वे तेज धारा के कारण उन्हें किनारे तक नहीं ला सके। श्री अब्दुल गफूर ने, जो उस समय नदी के किनारे नहीं रहे थे देखा कि श्री मोईदीन उन दोनों को पकड़कर पानी के ऊपर तैर रहे थे और वे उन्हें किनारे तक नहीं ला पा रहे थे। श्री गफूर फौरन तैरकर उस महिला और बच्चे के पास पहुँच गए और उन्हें नदी के किनारे पर ले आए। इस संघर्ष में श्री मोईदीन बहुत थक गये थे और किनारे की ओर तैरने समय वे भ्रम में फँसकर डूब गए। तब मैं सवार 18 यात्रियों में से श्री मोईदीन सहित तीन यात्रियों की जाने गई और गेब 15 यात्री तैरने हुए, सुरक्षित स्थान पर पहुँचकर या नदी के किनारे जमा लोगों की सहायता से भीत के मुह से बच निकले।

इस प्रकार श्री बी० पी० मोईदीन ने अपनी जान बचाकर और श्री अब्दुल गफूर ने एक डूबती हुई महिला व उसके बच्चे को बचाने की कोशिश करने में उत्कृष्ट साहस का परिचय दिया।

3. कुमारी सुजाता बालकृष्णन,

पुत्री श्री बालकृष्णन,

मंगलसु वीड,

कांजी रामल्लम, थोडुपुजा ईस्ट पी० ओ०,

जिला इडुक्की (केरल)।

9 मार्च, 1983 को राजकीय उच्च प्राथमिक पाठशाला, कांजीरामल्लम (इडुक्की जिला) के कक्षा 5 के कुछ विद्यार्थी बोपट्टर की भोजन करने के बाद पास की थोडुपुजा नदी के किनारे अपने भोजन के डिब्बे धोने गए। जब वे अपने भोजन के डिब्बे धो रहे थे, 10 वर्षीय बेबी गीता जे० नायर दुर्घटनाग्रस्त नदी में जा गिरी। नदी की तेज धारा में बहते हुए उसने जीवन के लिए संघर्ष शुरू कर दिया। नदी के किनारे खड़े विद्यार्थी भयभीत हो गए और उनमें से कुछ विद्यार्थी सहायता के लिए ओर से चिल्लाये। उन विद्यार्थियों में से एक कुमारी सुजाता बालकृष्णन ने नदी में छलांग लगा दी और डूबती हुई बेबी गीता की तरफ तैरने लगी जो नदी के तट से 4 मीटर की दूरी पर थी। कुमारी बालकृष्णन ने उसे पकड़ लिया और आपस नदी के किनारे पर ले आई। घटनास्थल पर पानी की गहराई लगभग 3 मीटर थी।

इस प्रकार कुमारी सुजाता बालकृष्णन ने अपने जीवन के खतरे की परवाह न करते हुए डूबती हुई एक बालिका की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

4. मास्टर चेरथदत्त कुमारन बाबूराज,

पुत्र श्री चेरथदत्त कुमारन,

कलसत्तुपुजा—पी० ओ० अंतिकाड,

तालुक त्रिचूर,

जिला त्रिचूर, केरल।

15 मार्च, 1981, को पदियम गांव, त्रिचूर जिले की कुमारी लिशा (7 वर्ष) पानी निकालते समय एक 15 फुट गहरे कुएं में जा गिरी। घटना के समय कुएं में 5 फुट पानी था। संकट में फंसी लड़की को जिलाहट सुनकर वहां के कुछ लोग कुएं के ईर्ष-गर्द जमा हो गए परन्तु वे लड़की को बचाने के लिए कुछ न कर सके। 15 वर्षीय मास्टर बाबूराज जो उक्त घटना के बारे में सुनकर कुएं के पास आ गए थे कुएं में कूद पड़े। उनके अनुरोध पर वहां खड़े लोगो ने एक रस्ती कुएं में फेंकी। तत्काल मास्टर बाबूराज लड़की को पकड़कर पानी के ऊपर ले आये। रस्ती के सहारे कुमारी लिशा के साथ ऊपर चढ़ते समय वे दोनों कुएं के गिर पड़े। सभी श्री अशोक, पुत्र श्री अश्वथी नाथी कुएं में उतर गए और उनकी सहायता से मास्टर बाबूराज कुमारी लिशा को कुएं से बाहर ले आए।

मास्टर चेरथदत्त कुमारन बाबूराज ने अपने जीवन की अत्यधिक खतरे में डालकर कुमारी लिशा को डूबने में बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

5. कुमारी वलियाकन कोचुप्पी कडीजा,

पुत्री बलियाकन कोचुप्पी,

पी० ओ० पेरोम्पोत्तुकर,

गांव थन्नियम,

जिला त्रिचूर (केरल)।

4 जून, 1981, का इलेक्ट्रोप्लान्गमिल ३.५५५५५५ के दो पुत्र यूसुफ (23) और हाकिम (19) त्रिचूर तालुक के थन्नियम गांव से एक तालाब के कम गहरे क्षेत्र में नहा रहे थे। दुर्घटनाग्रस्त, हाकिम फिसल कर करीब 15 फुट गहरे पानी वाले क्षेत्र में चला गया और जीवन के लिए संघर्ष करने लगा। उसका बड़ा भाई यूसुफ भी, जिसने हाकिम को बचाने की कोशिश की, गहरे पानी में गिर गया और वे दोनों डूबने लगे क्योंकि उनमें से किसी को भी तैरना नहीं आता था। कुमारी कडीजा (14 वर्ष) ने, जो उस समय तालाब पर थी, उन दोनों को जीवन के लिए संघर्ष करते देखा और वह दौड़कर वहां आ पहुँची। वह तालाब में कूद पड़ी और हाकिम को खींचकर किनारे पर ले आयी। तब वह जोर-जोर से चिल्लाई। उसकी चिल्लाहट सुनकर जो लोग वहां इकट्ठे हो गए थे वे यूसुफ को भी गंभीर हालत में पानी से बाहर निकाल लाए उसे अस्पताल ले जाया गया परन्तु उसकी जान बचाई नहीं जा सकी।

कुमारी कडीजा ने स्वयं अपने जीवन के खतरे की परवाह न करते हुए एक व्यक्ति की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

6. मास्टर अयकर कुलपुजा कृष्णन नायर अशोक कुमार,

पुत्र श्री नीलकान्तम् नायर,

अयकर कुलपुजा बौड नेदुमप्रयार,

थितापुजासेरी गांव,

तालुक तिरुवल,

जिला एल्लेपी (केरल)।

25 अक्टूबर, 1981 को मास्टर ए०के० अशोक कुमार स्नान करने के लिए नदी के किनारे पर स्थित "नीलीकस्तु मदाम कवातु" आया। एक भयभीत महिला की चीत्कार सुनकर वह वहां दौड़ा आया। वहां उसने देखा कि एक बच्चा नदी के तट से करीब 15 फुट की दूरी पर पानी में डूब रहा था और तेज धारा के साथ बहा जा रहा था। एक बंध के आसपास नदी के मुह जाने के कारण भंवर बना हुआ था और उस जगह पर नदी की गहराई लगभग 15 फुट थी। मास्टर अशोक कुमार ने तत्काल नदी में छलांग लगा दी और वह तैरकर बच्चे की ओर गये तथा उसे किनारे तक ले आये।

मास्टर अशोक कुमार ने अपनी जान की परवाह न करते हुए एक बच्चे की जान बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

7. श्री तंडा पन्थन मोहम्मद,

पुत्र श्री मायन तंडापरम्मा,

पी०ओ० कदावचूर,

जिला कन्नानोर (केरल)।

22 फरवरी, 1983 को कोलावाल्सूर हाई स्कूल कन्नानोर जिले की 9वीं कक्षा की एक छात्रा कुमारी पी०पी० पुष्पा अन्य लड़कियों के साथ नरमल स्ट्रीम पर लकड़ी के पुल को पार कर रही थी। वह अचानक धारा में जा गिरी। उस जगह पर पानी की गहराई लगभग 10 मीटर थी और पानी की अन्तर्धारा तेज थी। अन्य लड़कियां, जो उसके साथ पुल को पार कर रही थी, सहायता के लिए चिल्लाईं। उसी स्कूल के एक छात्र श्री टी०पी० मोहम्मद ने जो उसी रास्ते से आ रहा था उनकी जिलाहट सुनी और डूबती हुई लड़की को बचाने के लिए धारा में छलांग लगा दी। उसने लड़की को पकड़ लिया और उसे धारा के तट पर सुरक्षित ले आया।

श्री टी०पी० मोहम्मद ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए डूबती हुई लड़की की जान बचाने में माहिर और तत्परता का परिचय दिया।

8. श्री किशाकुबोलिल कुन्हीमन विजयन,
पुत्र श्री किशाकुबोलिल कुन्हीमन अबानूर,
असानी के नजदीक,
जिला त्रिपुर (केरल)

18 जुलाई, 1981 को श्रीमती मैरी अपने बच्चे के साथ अपने मकान की दीवार के पास तंग रास्ते से होकर गुजर रही थी कि दुर्घटनावश फिसलकर कुएं में जा गिरी। जोकि मकान की दीवार के बहुत ही पास था। कुर्छा 10 फुट गहरा था और उसमें 25 फुट पानी था। बच्चे की चीख-पुकार सुनकर वहां के लोग कुएं के इर्द-गिर्द जमा हो गए, परन्तु किसी ने भी मां और बच्चे को बचाने की हिम्मत नहीं की। शोर सुनकर एक पड़ोसी श्री के०के० विजयन भी वहां दौड़ा आया। वह फौरन रस्ती के सहारे कुएं में उतर गये। उन्होंने पहले बच्चे को उठा लिया और रस्ती को पकड़े रखा। कुएं के इर्द-गिर्द जमा लोगों ने खींचकर उन्हें बाहर निकाल लिया। धुबारा कुएं में जाकर उन्होंने लोगों की सहायता से बच्चे की मां को भी कुएं से बाहर निकाल लिया परन्तु तब तक वह मर चुकी थी।

श्री के०के० विजयन ने अपनी जान की गंभीर खतरे से डानकर एक बच्चे को बचाने से बचाने में प्रदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

9. श्री भगवन्त बापूराव शापेकर,
पोस्ट मोहा,
तालुक और जिला यवतमाल (महाराष्ट्र)

होम गार्ड्स संगठन के एक सदस्य, श्री भगवन्त बापूराव शापेकर जब यवतमाल में होम गार्ड परेड में भाग लेने के बाद अपने निजी काम से घरद गांव लौट रहे थे तो उन्होंने देखा कि एक ट्रक जिसका एम०एच० बी०-1800 नम्बर था तालेगांव में सड़क के नजदीक एक कुएं में गिरा हुआ था। यह कुर्छा भूमि सतह से 25 फुट गहरा है। श्री शापेकर दौड़कर घटनास्थल पर पहुंचे और बिना कोई समय गवाए बचाव कार्य में जुट गए। उन्हें पास में खड़े एक और ट्रक में एक रस्ती मिल गई और उन्होंने रस्ती का एक सिरा उस ट्रक की खिड़की से बांध दिया और दूसरे सिरे को पकड़कर वे कुएं में उतर गये और तीन पुरुषों व एक महिला को एक-एक करके अपनी पीठ पर लादकर बाहर निकाल लाए। यद्यपि ट्रक कुएं में गिरा हुआ था, फिर कुएं में जाने के लिए कुछ जगह बची हुई थी जिसका उपयोग श्री शापेकर ने फंसे हुए व्यक्तियों को कुएं से बाहर निकालने के लिए किया। इस बचाव कार्य में उन्हें छोटी-मोटी चोटें भी आईं। इन चार व्यक्तियों के घराबाना, जिन्हें उन्होंने कुएं से बाहर निकाला था, तीन अन्य व्यक्तियों को भी इसी दुर्घटना में चोटें आईं और वे सड़क पर पड़े हुए थे। वे उन सभी 7 व्यक्तियों को सड़क के पास लाए और राज्य परिवहन की एक बस से, जो उधर से गुजर रही थी, डाक्टरों इलाज के लिए यवतमाल अस्पताल ले गए। इस तरह से उन्होंने इन व्यक्तियों की जानें बचायी।

श्री बी०पी० शापेकर ने स्वयं अपनी जान की परवाह न करते हुए 7 व्यक्तियों की जान बचाने में प्रदम्य साहस, कर्तव्यपरायणता और सौमन्य का परिचय दिया।

10. श्री रमेश शंकरराव अम्मोरे,
पी०घो० जवाला बाजार,
तालुक बरमन,
जिला परभनी (महाराष्ट्र)

2 अप्रैल, 1982 को मुख्य नगर का पानी जवाला बाजार के नजदीक पुराना नहर में छोड़ा गया। श्री रमेश अपने दो साथियों के साथ नहर से गुजर रहे थे। उन्होंने एक लड़की को खींचते-खिलाते तथा

सहायता की पुकार करने हुए सुना। वे दौड़कर उस लड़की के पास आए और देखा कि 7/8 वर्ष की एक और लड़की नहर के पानी में गिर गई और पानी के तेज बहाव के साथ बह रही थी। वे फौरन पानी में कूद गए और डूबती हुई लड़की को बचाकर नहर के किनारे सुरक्षित स्थान पर ले आए।

श्री रमेश शंकरराव अम्मोरे ने स्वयं अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए डूबती हुई लड़की की जान बचाने में प्रदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

11. श्री विलीप यदुराज चहवाण,
22 मरस्वती गणेश कालोनी,
474, सदर बाजार (नवाड़े अस्पताल के नजदीक),
जिला मतारा (महाराष्ट्र)।

20 जुलाई, 1982 को जिला मतारा के गांव नूने की एक कुमारी सुलोचना बाबूराव सूबे (13 वर्ष) फिसलकर एक कुएं में जा गिरी जिसमें 25/30 फुट गहरा पानी था उस समय जो बहुत से लोग वहां इकट्ठे हो गए थे उन्होंने सहायता के लिए शोर मचाया लेकिन किसी ने भी डूबती हुई लड़की को बचाने की हिम्मत नहीं की। कानेज के एक छात्र, श्री विलीप चहवाण (19 वर्ष) ने जब यह कानेज जा रहे थे, सहायता के लिए चीख-पुकार सुनी। वे दौड़कर वहां आए और यह सोचते बिना कि परिणाम क्या होगा उन्होंने तुरंत कुएं में छलांग लगा दी और लड़की को बचा लिया।

श्री विलीप यदुराज चहवाण ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए डूबती हुई लड़की की जान बचाने में माहिर तथा तत्परता का परिचय दिया।

12. श्री प्रकाश केशवराव पकरकर,
मार्फत श्री पी०एन० आठे,
बुर्गा देवी मन्दिर के पास,
तुलसी बाग रोड, महल,
नागपुर (महाराष्ट्र)

लगभग भारी वर्षा होने के कारण 26 अगस्त, 1981 को नागपुर के महल क्षेत्र में एक श्री शंकर पांडुरंग खोडे का मकान ढह गया और दो महिलाएं व एक बच्चा मलबे के नीचे दब गए। पहले फ्लोर पर एक स्टील की प्रलमारी लटक गई और मलबे पर गिरने लगी बाली थी। अगर यह गिर गई होती तो उक्त तीनों व्यक्तियों की तत्काल मृत्यु हो जाती। नागपुर इंस्टीट्यूट ऑफ सिविल प्रिपेरेशन के स्वयं सेवक, श्री पकरकर मकान में घुस गए और अपनी जान को खतरे में डालकर उन्हें मलबे से निकाल लाए। बाव में, अग्निशमन कार्मिक तथा पुलिस घटनास्थल पर पहुंचे और उन्होंने स्थिति को संभाल लिया।

श्री पकरकर प्रकाश केशवराव ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए 3 व्यक्तियों की जान बचाने में प्रदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

13. डा० विश्वनाथ पांडुराव,
गांव जनोना,
तालुक पुसाड,
जिला यवतमाल (महाराष्ट्र)

21 अक्टूबर, 1981 को लोक निर्माण प्रभाग, पुसाड के एक श्री विजय कुमार पांडे अन्य श्रमिकों के साथ श्रमिक "मुफ्त" लाने के लिए एक विभागीय ट्रक में गांव जनोना गए। जबकि श्रमिक "मुफ्त" भरने में लगे हुए थे, श्री पांडे ट्रक के क्लीनर के साथ जनोना टैंक में स्नान करने चले गए। श्री पांडे गहरे पानी में चले गए। तैरते हुए वे थक गए और जब उन्होंने यह समझा कि वे किनारे तक नहीं तैर सकते तो वे सहायता के लिए चिल्लाये। क्लीनर भी सहायता के लिए चिल्लाया क्योंकि वह भी तैरना नहीं जानता था। डा० विश्वनाथ पांडुराव ने जो उपाय सड़क से

गुजर रहे थे, उनका चिल्लाना सुना। वे तुरन्त दौड़कर घटनास्थल पर गये और बिना कोई समय गंवाए डूबते हुए व्यक्ति के पास जा पहुँचे। वे उसे बेहोशी की हालत में टैंक से बाहर ले आए। डा० पाइकराव ने श्री पांडे के पेट से पानी को चूसकर उसे कृत्रिम श्वास दिया। उपचार के लिए पुसाइ में डा० भंडारी के अस्पताल में ले जाया गया जहाँ उसे होश में लाया गया।

डा० विश्वनाथ पाइकराव ने अपनी जान को खतरे में डालकर श्री विजय कुमार पांडे को डूबने से बचाने में बहुत बड़े महाम का परिचय दिया और अथक परिश्रम किया।

14. श्री सीता राम बागड़ा,
गांव भानपुर कलां,
तहसील जामवा रामगढ़,
जिला जयपुर (राजस्थान)

14 मई, 1983 को गांव दोला, तहसील जामवा रामगढ़, जिला जयपुर के श्री सोप्या के घर में शीघ्र भाग लग गई। उसका आठ महीने का बच्चा जलते हुए घर में फँस गया। एक ट्रक ड्राइवर, श्री सीता राम फौजन जलते हुए मकान में घुस गया और बच्चे को निगलन भीन के मुँह में बचा लिया।

इस प्रकार श्री सीता राम बागड़ा ने अपनी जान के खतरे की बिल्कुल परवाह न करते हुए एक आठ महीने के बच्चे की जान बचाने में अनुकरणीय वीरता तथा साहस का परिचय दिया।

15. श्री मिर्जा गालिब,
फास्टेबल नं० 443,
[मार्ग] पुलिस लाइन्स,
कोटा (राजस्थान)

26 मार्च, 1983 को एक महिला फिंसलकर छावविलास टैंक में गिर गई और जीवन के लिए संघर्ष करने लगी। उस समय टैंक में 34-40 फुट पानी था और टैंक कांजी घास से घरा हुआ था। एक बार कोई व्यक्ति इस घास में फँस जाए तो उसका जिवा बाहर निकलना बहुत मुश्किल हो जाता है। महिला सहायता के लिए चीख-पुकार कर रही थी। वहाँ करीब 400-500 लोग जमा हो गए थे परन्तु उनमें से टैंक में घुसने की हिम्मत किसी ने भी नहीं की। कांस्टेबल मिर्जा गालिब ने जो अपनी ड्यूटी पर जा रहे थे, वहाँ जमा भारी भीड़ को देखा और यह जानने के लिये कि क्या हुआ, घटनास्थल पर जा पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि टैंक में 50-60 गज की दूरी पर एक व्यक्ति डूब रहा था। वे अपनी जान की परवाह किए बिना तत्काल टैंक में डूब गये, डूबती हुई महिला के पास पहुँचे और उन्होंने उसे डूबने से बचा लिया।

इस प्रकार, कांस्टेबल मिर्जा गालिब ने स्वयं अपने जीवन को खतरे में डालकर एक महिला को डूबने से बचाने में अनुकरणीय साहस और साहस का परिचय दिया।

16. श्री मोहम्मद शाकिर,
[2352/5 कोठी यकीन शाह,
तोपखाना हज़ूरी,
जयपुर (राजस्थान)]

27 नवम्बर, 1982 को श्री मोहम्मद शाकिर अपने दोस्तों के साथ जयपुर में तालकटोरा के मजरीक गोविन्द देवजी मन्दिर के पीछे क्रिकेट खेल रहे थे। अचानक उन्होंने सहायता के लिए चीख-पुकार सुनी। जब वे घटनास्थल पर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि एक नाव, जिसमें 23 व्यक्ति सवार थे, तालकटोरा में उलट गई। जीवन के लिए संघर्ष कर रहे व्यक्तियों में 10 बच्चे और छह महिलाएँ थी हालाँकि वहाँ बहुत से लोग इकट्ठे हो गए थे पर किसी ने भी डूबते हुए व्यक्तियों को बचाने की हिम्मत नहीं की। जहाँ यह घटना हुई थी वहाँ पानी की गहराई करीब 8-10 फुट थी। श्री शाकिर ने फौरन टैंक में छलांग लगा दी और दो

बच्चों के बालों को पकड़कर उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले आये। उन्होंने तीन बार ऐसा किया और वे 10 बच्चों और 6 महिलाओं की जान बचाने में कामयाब रहे। इस बचाव कार्य में श्री शाकिर की टांगों में छोट आ गई। उन्हें हावटी उपचार के लिए एम०एम०एल० अस्पताल ले जाया गया।

श्री मोहम्मद शाकिर ने स्वयं अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए 10 बच्चों और 6 महिलाओं की जान बचाने में अनुकरणीय साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

17. श्री सत्यन करमाकर,
मोलेबुवडा,
पी पी एवं जिला बांजुडा (पश्चिम बंगाल)

28 दिसम्बर, 1982 को श्री कल्याण चक्रवर्ती नामक एक लड़का मोलेबुवडा, बांजुडा में अपने दादा के पास रहने आया था। वह अचानक घर के गहरे कुएं में गिर गया और डूब गया। कुएं की गहराई 46 फुट थी और घटना के समय उसमें पानी की गहराई तलहटी से करीब 28 फुट थी। स्थिति की गंभीरता के कारण वहाँ जमा सभी लोग परेशान थे। भयानक चीख-पुकार सुनकर उसी बस्ती के श्री सत्यन करमाकर मौके पर आ गए। वे कुएं की दीवार पर लगी कुड़ियों और द्यूबबैल के दीवार से लगे पाइप को पकड़कर कुएं में उतर गए। उन्होंने पानी में गोता लगाया और वे लड़के को पानी की स्तह पर ले आये और उसे मतह पर रखे रहे। जमा वहाँ लोगों द्वारा फेंकी गयी मजबूत रस्सी की सहायता से वे बच्चे को कुएं से बाहर ले आए।

श्री सत्यन करमाकर ने स्वयं अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए श्री चक्रवर्ती की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

18. मास्टर संदीप पाटिल,
मार्फत मेजर जे० पाटिल,
ओ०सी०-5, माह० बटालियन, एनसीसी,
कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

22 अप्रैल, 1983 को श्री हरजीत सिंह जो सैरना नहीं जानता था (22 वर्ष) सैरने के लिए नगर परिषद्, नांदेड के तालाब में गया। जब उसने अन्य व्यक्तियों को तालाब के गहरी तरफ कूबते और डूबकियां लगाते देखा तो उसने भी अपनी कमर पर रखे की ट्यूब बांध ली और तालाब में छलांग लगा दी। जैसे ही उसने छलांग लगाई, कुर्भाग्यवश रखे की ट्यूब उसकी टांगों से फिसल कर बाहर निकल गई और वह अपने जीवन के लिए संघर्ष करने लगा। देखने वालों ने यह सोचा कि वह मजाक कर रहा था। मास्टर संदीप पाटिल ने जो कि तालाब के किनारे खड़े थे, देखा कि श्री हरजीत सिंह ने मांस मने के लिए एक बार भी अपना निर बाहर नहीं निकाला था और इस प्रकार वे स्थिति भांप गये। मास्टर संदीप ने तुरन्त छलांग लगाई और वे श्री हरजीत सिंह के नजदीक पहुँचे और उन्होंने उसे ट्यूब से दी। श्री हरजीत सिंह ने आसुरता से ट्यूब को पकड़ लिया। इसके बाद, मास्टर पाटिल सफलतापूर्वक उसे गहरे पानी से बाहर तालाब के किनारे ले आए।

मास्टर संदीप पाटिल ने अपनी जान की परवाह न करने हुए श्री हरजीत सिंह को डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

19. मास्टर शमील शर्मा,
टी 187/1, आफीसर्स इन्क्लेव,
एयरफोर्स स्टेशन, बमरोली,
इलाहाबाद (उ०प्र०)

25 जनवरी, 1984 को एयरफोर्स स्टेशन, बमरोली, इलाहाबाद के रक्षा कर्मियों के बच्चों को ले जा रही एक स्कूल बस आफीसर्स इन्क्लेव के सामने क्रॉस रहित रेलवे क्रॉसिंग के दक्षिण में रुकी। सेंट मेरी

कान्स्टे की कुमारी हेमिका छतवाल पहली छात्रा थी जो पार करने के लिए रेलवे लाईन की तरफ बढ़ी। उस समय, एक मालगाड़ी उत्तर की ओर की पटरी से गुजर रही थी। इस कारण से उसने धूम्रपान किया और गाड़ी के लाईन से गुजरने ली, इस वान से देखकर रहते हुए कि विपरीत दिशा से दक्षिण ओर की पटरी पर एक अन्य गाड़ी आ रही थी, यह दक्षिण की ओर की पटरी पर चली गई। जब वह पटरियों के बीच में थी तो उसने सीटी सुनी और भयभीत होकर उसी पटरी पर एक गाड़ी को तेज गति से आते हुए देखा। भय के मारे, वह पटरी पर खड़ी मुन्न हो गई। सेंट जोसेफ कालेज, हलाहाबाद के कक्षा 4-वीं के छात्र, शर्माय शर्मा ने, जो कि उसी बस से उतरा था, हेमिका की असहाय स्थिति को देखा और मत्तकट खतरे को भापते हुए, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए, वह तेजी से पटरी की तरफ लपका और भयभीत हेमिका को सुरत पटरी से बाहर खींच लिया।

इस प्रकार, श्री शमील शर्मा ने स्वयं को भारी खतरे में डालते हुए अपनी साथी छात्रा की जान बचाने में उत्कृष्ट साहस, वीरता और सूक्ष्म का परिचय दिया।

20. नं० 14295146 सिगनलमैन वाली शेटी मुनेन्दुदो,

बिहार और उड़ीसा सब-एरिया,

सिगनल कंपनी,

दागापुर छावनी-801503

8 अगस्त, 1982 को 1600 बजे जब नं० 14295146 सिगनलमैन वाली शेटी मुनेन्दुदो घर वापस लौट रहे थे, उन्हें रजिमेंटल पुलिस ने यह बताया कि एक महिला नहर में गिर गई और डूब रही थी। सिगनलमैन मुनेन्दुदो घटनास्थल की ओर दौड़े जहां भीड़ इकट्ठी हो गई थी। जहां महिला गिरी थी, वहां नहर की गहराई लगभग 25 फुट थी और कुछ दिन पहले भारी मूसलाधार वर्षा होने के कारण जल का प्रवाह तेज था। सिगनलमैन मुनेन्दुदो ने उस महिला की ओर एक कामचलाऊ बचाव रस्ती फेंक कर उसे खींचने का प्रयत्न किया, किन्तु वह बचाव रस्ती को दूर तक पकड़े नहीं रख सकी। सिगनलमैन मुनेन्दुदो क्षणभर भी हिचके बिना नहर में कूद पड़े और तैर कर महिला तक पहुंचे। जब वह उस महिला के पास पहुंचे तो महिला ने उन्हें कम कर पकड़ लिया और वह तथा महिला दोनों पानी में नीचे डूबने लगे। उन्होंने उस महिला की दहशत हटाने के लिए उसे एक तमाचा मारा और फिर तैरकर महिला सहित नहर के किनारे वापस आ गये। पूरी तरह शक्तिहीन हो जाने और बुरी तरह थक जाने के बावजूद, उन्होंने कोई विश्राम नहीं किया और तत्काल उस महिला के पेट में गए हुए पानी को बाहर निकालना शुरू कर दिया।

सिगनलमैन वाली शेटी मुनेन्दुदो ने अपनी जान की परवाह न करते हुए डूबने से एक महिला की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

21. श्री संदीप पाठवा,

मुमुक् स्क्वाड्रन लीडर आर०पी० पाठवा,

नं० 25 ई०डी०(एम०) एयर फोर्स,

देवगाली-422501

13 मई, 1983 को, श्री संदीप पाठवा अपने भाई और मित्रों के साथ एयर फोर्स आफिसर्स मेस के पार्श्व से बहने वाली डेरना नदी में तैरने के लिए गए। कुछ अन्य ग्रंथिकांगी और उनके बच्चे भी उस समय नदी में तैर रहे थे। जब श्री संदीप नदी के किनारे लड़े थे तो उन्होंने बचाओ, बचाओ की चीखें सुनीं। एक युवा महिला ने, जो उन्होंने पानी में खड़ी थी, चिल्ला कर कहा "संदीप वह डूब रहे हैं"। संदीप ने चांगे तरफ नजर दोहाई और देखा कि फ्लाईंग अफसर पी० के० बागमार अपनी सिरपानी से बाहर निकालने के लिए मगध कर रहे थे। श्री संदीप तत्काल नदी में कूद पड़े और उस स्थान पर पहुंचे, जो लगभग 40 मीटर की दूरी पर था। तब तक, उक्त अफसर चार-पांच बार पानी में ऊपर-नीचे जा चुका था और उग समय भी पानी में नीचे आ रहा था जब श्री संदीप ने उसके पास पहुंचने के बाद उसके वल पकड़ कर उसे

बाहर खींचने की कोशिश की थी। दुर्भाग्यवश, उक्त अफसर के वल छोटे-छोटे थे और श्री संदीप बालों को पकड़ नहीं सके। यह मतभ्रम करने के बाद कि वह उक्त अफसर को बालों के जगह खींच नहीं सकेगा, संदीप ने अफसर की उसकी बगलों में पकड़ कर ऊपर की ओर उठाया ताकि अफसर गाम ले सके। फ्लाईंग अफसर का टांगी में त केवल फेंक आ गई थी, बल्कि उसके पेट में कुछ पानी भी चला गया था और वह पूर्ण रूप से नियंत्रण से बाहर था, इस प्रकार उसने संदीप को पकड़ने की कोशिश की। संदीप ने उन्हें अफसर द्वारा पकड़े जाने से डराने वाले जोखिम को तत्काल भाग लिया। स्वयं को छुड़ाने के बाद, वह यह मुनि-चित्त करने के लिए फ्लाईंग अफसर की पानी के नीचे से ऊपर धकेलते रहे ताकि वह सांस ले सके। इस प्रक्रिया में थक जाने के बावजूद, संदीप और सहायता पहुंचते तक अफसर के सिर की पानी के बाहर रखे रहे और फ्लाईंग अफसर की नदी के किनारे लाया गया।

इस प्रकार, श्री संदीप पाठवा ने स्वयं अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए, डूबने में एक व्यक्ति की जान बचाने में उत्कृष्ट साहस का परिचय दिया।

22. श्री शंकर लाल जेडिया,

पुत्र श्री बसन्त लाल,

शिरवा,

जिला मृतशुम्न (राजस्थान)।

21 अप्रैल, 1981 को सुबह लगभग 8 बजे, रेलवे कालोनी बाइमेर, राजस्थान के निकट एक मकान के निवासी श्री शंकर लाल जेडिया ने "बचाओ-बचाओ" की चीखें सुनीं और रेलवे कार्गो स्कूल से काफी धुआं निकलता हुआ देखा। वह तत्काल घटनास्थल की तरफ दौड़े और स्कूल की प्राग की लपेट में पाया। स्कूल के सभी दरवाजों और खिड़कियों में भी प्राग लगी हुई थी। दो छात्रों को छोड़कर जिनकी प्राय लगभग 8 से 10 वर्ष थी, सभी छात्र निकल भागे थे। प्राग में घिरे हुए वे दो लड़के सहायता के लिए चिल्ला रहे थे। किसी व्यक्ति ने भी स्कूल में घुसने और बच्चों को बचाने का साहस नहीं किया। इसी बीच दोनों लड़के धुआं के कारण बेहोश हो गए। श्री जेडिया ने साहस बढ़ाकर और बे चले हुए दरवाजों से होकर स्कूल के अन्दर घुस गये और उन्होंने लड़कों की तलाश करना शुरू कर दिया प्राग की लपेटों और धुआं के बावजूद, उन्होंने लड़कों को अपनी बांहों में उठा लिया और जलते हुए दरवाजों से होकर भागे हुए बाहर निकल आये और इस प्रकार उन लड़कों की जान बचा ली। प्राथमिक चिकित्सा सहायता मिलने के बाद लड़के होश में आ गए।

श्री शंकर लाल जेडिया ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए, दो बच्चों की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

23. श्री जगदेव राज दत्ता,

जूनियर इंजीनियर ट्रक,

सहायक इंजीनियर ट्रक के अधीन,

जम्मू।

7 नवम्बर, 1981 को जूनियर इंजीनियर, श्री जे० आर० दत्ता दोपहर का भोजन करने के लिए जा रहे थे। उन्होंने देखा कि दो वर्ष का एक बच्चा सड़क पर चल रहे एक घाटन (ट्रक नं० जे० के० 0269) के सामने आ गया था। श्री दत्ता बच्चे को कुचले जाने से बचाने के लिए आगे दौड़े और वह ऐसा करने में सफल हो गए। दुर्भाग्यवश, श्री दत्ता रथ बाइन के नीचे आ गए। विभागीय कर्मचारियों ने घात का उपकरण उन्हें वापस निकाला। उन्हें एक राज्य अस्पताल में दाखिल कराया गया जहां उनका आई अनेक चोटों का उपचार किया गया।

श्री जे० आर० दत्ता ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए, एक बच्चे की जान बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

24. श्री शान्तिनाथ टटोबा कराडे,
के०—90 घामुरली बावन घाल,
ठाकुरली पाथर हाउस डेम्बीवली (पश्चिम),
मातुका कल्याण,
जिला थाने (महाराष्ट्र)

25. श्री भूपाल भाऊ बागने,
पित्र विल्डिंग नं० 2, धार० नं० 10,
मावरकर रोड, डेम्बीवली (पूर्व),
नालुका कल्याण,
जिला थाने (महाराष्ट्र)

6 मार्च, 1983 की दस वर्ष की आयु का एक लड़का खेलते हुए एक कुण में गिर गया जोकि डेम्बीवली (पश्चिम) के म्युनिसिपल गार्डन में स्थित था। कुणों 20—25 फुट गहरा था और उसकी परिधि लगभग 12 फुट थी घटना का पता चलने पर, लड़के का पिता कुण की तरफ दौड़ा-दौड़ा गया और अपने पुत्र को बचाने के लिए कुण में कूब पड़ा। दुर्भाग्यवश, पिता तैरना नहीं जानता था और दोनों सहायता के लिए चिल्लाने लगे क्योंकि वे डूब रहे थे। श्री शान्तिनाथ टटोबा कराडे और श्री भूपाल भाऊ बागने, जोकि कुण के नजदीक ही एक दुकान पर बैठे हुए थे, कुण की ओर दौड़े। वे कुण में कूद पड़े और उन्होंने पिता और पुत्र दोनों को बचा लिया।

श्री शान्तिनाथ टटोबा कराडे और श्री भूपाल भाऊ ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए, डूबने से दो व्यक्तियों की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

26 श्री लालू राम कोली,
ग्राम मसलाना,
तहसील खालसोल,
जिला जयपुर (राजस्थान)

19 जुलाई, 1981 को मोरल नदी में बाढ़ आई हुई थी। जिसके परिणामस्वरूप इसके किनारे की बस्ती मसलाना की धानी पूरी तरह से तबाह हो गई थी। मकान तथा पेड़ बाढ़ के पानी में 12 फुट की ऊंचाई तक डूबे हुए थे। श्री लालू राम कोली, उनकी पत्नी, तीन पुत्र और भरत लाल मीणा नामक एक लड़के (10 वर्ष) समेत गांव के सभी 21 व्यक्ति बाढ़ के प्रकोप से स्वयं को बचाने के लिए शिव मंदिर की छत पर चढ़ गए। लेकिन, दुर्भाग्यवश, शिव मंदिर भी ढह गया और मंदिर की छत पर चढ़े सभी व्यक्ति पानी में बह गए। श्री कोली अपने परिवार के सभी सदस्यों की मृत्यु अमहाय बने देख रहे थे। अपने परिवार के सदस्यों की मृत्यु का मदमा सहन न कर पाने के कारण उन्होंने तेज बह रहे पानी में कदम अपना जीवन समान करना चाहा। अचानक एक लड़के ने, जिसका नाम भरत लाल मीणा था, श्री कोली की धोती का छोर पकड़ लिया। श्री कोली ने मासूम लड़के को देखा और उसे बचाने का निर्णय कर लिया। उन्होंने उस लड़के को कंधों पर उठा लिया और एक पेड़ पर चढ़ गये। एक हाथ से लड़के को और दूसरे हाथ से टटनी को पकड़े हुए, वह चार घंटे तक पेड़ पर रहे। जब बाढ़ का पानी कम हो गया तब श्री कोली पेड़ से नीचे उतरे और लड़के को अपने कंधे पर रखे हुए, उन्होंने नदी पार की। इस प्रकार, उन्होंने उक्त लड़के की जान बचाई।

श्री लालू राम कोली ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए, एक लड़के की जान बचाने में उत्कृष्ट साहस का परिचय दिया।

27 कुमारी फूला,
पुत्री श्री बन्दी लाल मीणा,
निवासी ग्राम ईचर,
जिला मवाई माधोपुर (राजस्थान)

10 अगस्त, 1982 को 5 वर्षीय रवि प्रकाश अपनी छोट की माय ग्राम ईचर के नजदीक बनाव नदी के किनारे गया हुआ था। नदी के किनारे बच्चे को खेलता हुआ छोड़कर वह अपने कपड़े धोने लगी। कुछ

समय बाद, जब उसने बच्चे की ओर नजर डाली तो वह उसे वहां नहीं दिखाई दिया। वह रोने-चिल्लाने लगी। उस समय, कुमारी फूला और श्रीमती कजोरी देवी भी नदी के तट पर मौजूद थी। महिला के चिल्लाने की आवाज सुनकर, कुमारी फूला और श्रीमती कजोरी देवी पानी की दिशा में नदी के किनारे किनारे दौड़ती हुई गई। कुमारी फूला ने लगभग 100 मीटर की दूरी पर बच्चे को लगभग 10 फुट गहरे पानी में डूबते हुए देख लिया वह तुरन्त नदी में कूद पड़ी और उसने बच्चे को पकड़ लिया किन्तु वह वापस नहीं आ सकी और डूबने लगी। तब श्रीमती कजोरी ने अपनी साड़ी को उतार कर फूला को धार फेंक दी, जिसने एक हाथ से साड़ी को पकड़ा और दूसरे हाथ में बच्चे को पकड़े रखा। श्रीमती कजोरी और बच्चे की छोट ने उन्हें सुरक्षित खींच लिया।

इस प्रकार, कुमारी फूला ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए, डूबने से एक बच्चे की जान बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

28. श्री सिकल दाम उर्फ मिल्कू,

कुम्हार छोडे पट्टी धर्माधाय,

जिला टिहरी गढ़वाल (उ० प्र०)

28 नवम्बर, 1982 को राम डूी धर्माधाय उर्फ खाना नरेश नगर, जिला टिहरी गढ़वाल की श्रीमती कमनी पत्नी श्री सोनू, पणुओं के लिए पेड़ के पत्ते काटने के लिए एक पहाड़ी की चोटी पर एक पेड़ पर लड़ी। अकस्मात पेड़ की शाखा टूट गई और वह एक झाड़ी के ऊपर गिर गई जोकि पहाड़ी से लगभग 100 फुट नीचे थी। यदि वह झाड़ी में न गिरती तो वह नीचे लुडक कर मर जाती। हालांकि घटनास्थल पर लगभग 300 से लेकर 400 व्यक्ति मौजूद थे, किन्तु किसी ने भी महिला को बचाने की हिम्मत नहीं की। इन संकटपूर्ण स्थिति में, श्री सिकल दाम ने उत्कृष्ट साहस दिखाया और इन बात के बावजूद कि झाड़ी के नजदीक कोई अन्य पेड़ नहीं था, वह किसी तरह पहाड़ी पर चढ़ गये और महिला को अपनी पीठ पर लाद कर सुरक्षित स्थान पर ले आये। महिला को अपनी पीठ पर लादे हुए पहाड़ी से उतरते हुए उनके फिसल जाने की हर संभावना थी और फिसल जाने की स्थिति में उन दोनों की मृत्यु निश्चित थी।

श्री सिकल दाम उर्फ मिल्कू ने अपनी जान का भारी खतरे में डालकर एक महिला की जान बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

29. सैनिक राम कृष्ण शुक्ल,

भाफन जिला कमांडेंट,

होम गार्ड्स,

वतिया (म० प्र०)

20 मई, 1983 को दो से लेकर चार वर्ष तक की आयु के तीन छोटे बच्चे एक आंशिक रूप से ठके सेप्टिक टैंक के नजदीक खेल रहे थे जो 10 फुट लम्बा 6 फुट चौड़ा और 8 फुट गहरा था। टैंक 6 फुट की गहराई तक मल-मूत्र से भरा हुआ था और हवा शुद्ध नहीं थी। उनसे से एक बालक जिसका नाम राम बिहारी सोनी था तत्काल मिर के बल टैंक में गिर गया। अन्य दो बालकों ने सहायता के लिए चीखना-चिल्लाना शुरू कर दिया। उनकी चीखें सुनकर सैनिक राम कृष्ण शुक्ल, जो 100 मीटर की दूरी पर अपना खाना खा रहे थे, सेप्टिक टैंक की ओर दौड़े और उन्होंने देखा कि बच्चे के पैर की उंगलियां और तलव हां दिखाई दे रहे थे। वे तत्काल टैंक में कूब पड़े और उन्होंने वहाँ बच्चे को उठा लिया तथा बच्चे के मिर को मल मूत्र गंदगी आदि की गंध से ऊपर रखते हुए तैरना शुरू कर दिया। तब तक कुछ अन्य व्यक्ति भी घटनास्थल पर दौड़कर आ गये और उन्होंने बच्चे तथा सैनिक शुक्ल को बाहर निकाल लिया। बच्चे की नाक और मुंह से खून आने लगा था।

जब बच्चे को होश आ गया तो सैनिक शुक्ल ने उसे धाक किया, उसे और प्राथमिक चिकित्सा सहायता दी और फिर बच्चे को अस्पताल ले जाया गया।

व्यक्तिगत रूप से जान को खतरा होने के प्रतिरिक्त सेप्टिक टैंक में कूदने के लिए धिरेले ही व्यक्ति तैयार होते हैं क्योंकि उसकी गन्दगी और बवबू से सभी को घृणा होती है। सैनिक राम कृष्ण शुक्ल ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए सेप्टिक टैंक में कूदने और डूबते हुए बच्चे का बचाने में उत्कृष्ट साहस का परिचय दिया।

30 कैप्टेन प्रेम दास जाधव,

1 आर्द्र आर० एड बी०,

रेजिमेंट एन०सी०सी०,

आर० नगर,

हैदराबाद-30 (अ०प्र०)

18 अगस्त, 1983 का लगभग 1555 बजे एक मजदूर जमीन से 45 फुट की ऊंचाई पर एक कामचलाऊ बास की सीढ़ी के ऊपरी सिरे पर चढ़े हुए आंध्र प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय के छात्रावास की दूसरे फ्लोर की दीवार पर सफेदी कर रहा था। अचानक मेष कटे और मूसलाघार वर्षा होने लगी। भारी वर्षा के कारण वह सीढ़ी जिस पर चढ़े हुए मजदूर काम कर रहा था फिसल गई और बीच में से टूट कर नीचे गिर गई। मजदूर ने अपनी उंगलियों से एक खिड़की के छज्जे को पकड़ लिया और सहायता के लिए बड़ी आसुरता से चिल्लाते हुए खतरनाक स्थिति में झूल रहा था। नजदीक ही एन०सी०सी० की परेड हो रही थी और एन०सी० सी० के अधिकारियों ने एक बचाव दल संगठित किया और मजदूर को सुरक्षित नीचे लाने की काशिश की, विन्तु वे मजदूर तक नहीं पहुँच सके। हमी बीच कैप्टेन प्रेम दास जाधव जो परेड में भाये हुये थे स्वयं अपनी पहल और युक्ति से ड्रेन पाइप पर (बन्दर की तरह) चढ़ गये जोकि वर्षा के कारण फिसलन वाला हो गया था और मजदूर की ऊंचाई तक बढ़ते गये। वह पाइप से खिड़की की रेलिंग पर कूब गये और उन्होंने एक हाथ से खिड़की की रेलिंग और साथ ही दूसरे हाथ से मजदूर को पकड़ लिया जिसकी उंगलियों की पकड़ खिड़की के छज्जे से छूटने लगी थी। उन्होंने अपना सन्तुलन बनाए रखा और एक हाथ से मजदूर को पकड़े रखा क्योंकि मजदूर बहुत डुबला पतला और शारीरिक रूप से कमजोर था। इसी बीच अन्य कैप्टेन ने एक मानव-सीढ़ी बना ली और कुछ अन्य छत के रास्ते से खिड़की के शीश तक पहुँच गए और मजदूर को बचा लिया।

कैप्टेन प्रेम दास जाधव ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए, एक मजदूर की जान बचाने में उत्कृष्ट साहस, पहल और तत्परता का परिचय दिया।

मु० मोलकण्ठन
राष्ट्रपति का उप-सचिव

उद्योग मंत्रालय

औद्योगिक विकास विभाग

नई दिल्ली, दिनांक 27 नवम्बर 1984

आदेश

स० 14 (8) 84-कागज-केंद्रीय सरकार, कागज (उत्पादन का विनियमन) आदेश, 1978 के खंड 9 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, मैंने पूनालूर पेपर मिल्स, पूनालूर केरल का, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि उक्त मिलो का ठीक पूर्ववर्ती तीन वर्षों में भारी वित्तीय हानि हुई है, 1 अप्रैल, 1981 को प्रारंभ होने वाली और 30 सितंबर, 1984 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए उक्त आदेश के खंड 3 की अपेक्षाओं से छूट देती है।

प्रमोद चन्द्र रावल, निदेशक

तकनीकी विकास महानिदेशालय

नई दिल्ली, दिनांक सितम्बर 1984

सकल्प

स० क्रमा०/9(3)/84/डी० एल० सी०-1—भारत सरकार में लोक, सुरक्षा लॉकिंग प्रणालियों, सुरक्षा उपकरणों की नामिका का गठन करने का निर्णय किया है, जिसमें निम्नलिखित सदस्य सकल्प जारी होने की तिथि से दो वर्ष तक की अवधि के लिए होंगे —

- | | |
|--|---------|
| 1 श्री पी० आर० लाले,
महानिदेशक (तकनीकी विकास),
तकनीकी विकास महानिदेशालय,
उद्योग भवन,
नई दिल्ली-110011 | मध्यक्ष |
| 2. श्री जी० वेक्टरमणन,
संयुक्त सचिव,
औद्योगिक विकास विभाग,
उद्योग भवन,
नई दिल्ली-110011 | सदस्य |
| 3 श्री डी० बी० मलिक,
औद्योगिक सलाहकार (इंजी०),
तकनीकी विकास,
महानिदेशालय, उद्योग भवन,
नई दिल्ली-110011 | " |
| 4. श्री सुवर्णन सिंह,
संयुक्त निदेशक,
वाणिज्य मंत्रालय,
उद्योग भवन,
नई दिल्ली-110011 | " |
| 5 श्री शैलेन्द्र शर्मा,
उप सलाहकार (इंजी०),
योजना आयोग, योजना भवन,
पालियामेट स्ट्रीट,
नई दिल्ली-110011 | " |
| 6. श्री के० एस० लाम्बा,
उप निदेशक, विकास आयुक्त का कार्यालय
(लघु उद्योग) निर्माण भवन,
नई दिल्ली-110011 | " |
| 7. श्री जे० एल० छावड़ा,
उप महानिदेशक (निरीक्षण),
पूति एव सिपटान महानिदेशालय,
जीवन्तारा, 5, पालियामेट स्ट्रीट,
नई दिल्ली-110011 | " |
| 8. श्री डी० एस० कुलकर्णी,
वरिष्ठ अभियन्ता,
स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया,
प्रिमिसिज डिपार्टमेंट,
केंद्रीय कार्यालय,
पोस्ट बॉक्स न० 12,
बम्बई-400021 (महाराष्ट्र)। | " |
| 9. श्री एस० सी० मेहता,
वरिष्ठ प्रबन्धक
(एम० एम० एण्ड डी०),
भारतीय पर्यटन विकास निगम लिमिटेड,
नई दिल्ली हाऊस, तृतीय तल,
27, बाराखम्बा रोड,
नई दिल्ली-110001 | " |

10. श्री के० जी० देवधर, मुख्य अभियन्ता, ताज पैलेस होटल, मरदार पटेल मार्ग, नई दिल्ली-110021 ।	सदस्य	2. नामिका के विचारार्थ विषय निम्नलिखित होंगे :— 1. उद्योग की वर्तमान विकास स्थिति और भावी परिप्रेक्ष्य पर विचार करना और इसके त्वरित विकास के अभ्युपाय के लिए सिफारिश करना । 2. प्रौद्योगिकी के वर्तमान स्तर का मूल्यांकन करना और प्रौद्योगिकी की भावी आवश्यकता का पूर्वानुमान लगाना जिसमें लॉकों सुरक्षा, लॉकिंग प्रणालियों, और सुरक्षा उपकरणों के बारे में विषयसनीयता, प्रचालन वक्षता और उत्पादिकता में सुधार लाना शामिल है । 3. मानकीकरण की प्राप्त स्थिति की जांच करना और लॉक सुरक्षा, लॉकिंग प्रणालियों व सुरक्षा उपकरणों के लिए और अधिक युक्तिसंगत कार्यक्रम प्रस्तुत करना । 4. वर्तमान तथा विगत में हुए आयातों के समूचे विवरणों के आंकड़े एकत्र करने के अभ्युपाय की सिफारिश करना ताकि उद्योगों के भावी विकास में इनका उपयोग हो सके । 5. अनुसन्धान, डिजाइन तथा विकास के विशिष्ट क्षेत्रों का मूल्यांकन करना और उस पर सिफारिश देना । 6. उद्योग विकास से सम्बन्धित अन्य कोई विषय ।
11. श्री जे० एन० गोदरेज, निदेशक, मै० गोदरेज एण्ड इकायसी मैग्नेटिक चरिंग कम्पनी, प्राइवेट लिमिटेड, गोदरेज भवन, होम स्ट्रीट, बम्बई-400001 ।	सदस्य	आदेश आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी सम्बन्धित व्यक्तियों को भेजी जाये। यह भी आदेश दिया जाता है कि ग्राम सूचना के लिए इसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।
12. श्री डी० आर० समाली, मार्फत भारतीय इंजीनियरी उद्योगों की समिति, 172, जोर बाग, नई दिल्ली-110003 ।	सदस्य	के० सी० गंजवाल, निदेशक (प्रशासन)
13. श्री डब्ल्यू० एन० मेरा, अध्यक्ष, आल इण्डिया लाक मैग्नेटिक चरिंग एसोसिएशन, पारकर लॉकम बिल्डिंग पड़ाव द्वै, अलीगढ़-20200 । (उ० प्र०) ।	सदस्य	
14. श्री वी० के० बजाज, प्रसीगड लघु उद्योगों की समिति, मोरिस बजाज इण्डस्ट्रिज, ए-5, इण्डस्ट्रियल एस्टेट, अलीगढ़-202001 । (उ० प्र०) ।	सदस्य	
15. श्री वी० अमलराज, सचिव,* डिनडीगुल लाक बरकर्स इण्डस्ट्रियल, कोआपरेटिव सोसाइटी, एम० आर० मिल रोड, (डिनडीगुल-624006 । (तमिलनाडु) ।	सदस्य	
16. श्री जफर अलम, मै० नेर्बी लॉक (रजि०) , सी-7, प्रौद्योगिक एस्टेट, अलीगढ़-202001 । (उ० प्र०) ।	सदस्य	
17. श्री ए० सी० पटेल, पार्टनर, मै० बालटेक इण्डस्ट्रिज, 4/24, इण्डस्ट्रियल एस्टेट, गोरबा रोड, बादावरा-390016 (गुजरात) ।	सदस्य	
18. प्रबन्ध निदेशक, मै० टाईगर हाइवेयर एण्ड टूल लिमिटेड, मोरिस रोड, अलीगढ़-202001 ।	सदस्य	
19. श्री मोले दास मालिक, वाम लॉक मैग्नेटिक चरिंग कम्पनी, 16, मॉनडल सन्दिह लेम, कलकत्ता-700053 , (पश्चिमी बंगाल) ।	सदस्य	
20. श्री एम० एम० अली खान, विकास अधिकाारी, तकनीकी विकास, सहानिवेशालय, उद्योग भवन, नई दिल्ली-110011 ।	सदस्य-सचिव	

खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्रालय

नागरिक पूर्ति विभाग

नई दिल्ली, दिनांक 27 नवम्बर 1984

संकल्प

विषय : भारतीय विधिक माप विज्ञान संस्थान, रांची के लिये सलाहकार समिति का पुनर्गठन ।

सं० डब्ल्यू०एम० 2(5)/84--भारतीय विधिक माप विज्ञान संस्थान नियम, 1980 के नियम 8 के अनुसरण में तथा खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्रालय, नागरिक पूर्ति विभाग के 12 मार्च, 1983 के संकल्प सं० डब्ल्यू०एम०—9(11)/80 का अधिक्रमण करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा भारतीय विधिक माप-विज्ञान संस्थान, रांची की सलाहकार समिति का पुनः गठन करती है, जिसमें निम्नलिखित व्यक्ति होंगे :—

अध्यक्ष

1. सचिव

भारत सरकार
नागरिक पूर्ति विभाग
नई दिल्ली ।

सदस्य

2. महाप्रबन्धक

भारत सरकार टकसाल
बम्बई ।

3. डा० आर०जी० काम्बले,

निदेशक
विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विभाग
नई दिल्ली ।

4. सचिव
भारत सरकार
विधि, न्याय तथा कम्पनी कार्य मंत्रालय
(विधायी विभाग)
नई दिल्ली ।
5. निदेशक
राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला
नई दिल्ली ।
6. निदेशक
कृषि
बिहार सरकार
पटना ।
7. नियंत्रक
बाट तथा माप
हिमाचल प्रदेश सरकार
शिमला ।
8. नियंत्रक
बाट तथा माप
कनाडा सरकार
बंगलौर ।
9. बाट तथा माप नियंत्रक
मध्य प्रदेश सरकार
भोपाल ।
10. प्रशिक्षार्थी प्रतिनिधि
भारतीय विधिक माप विज्ञान संस्थान
रांची ।
11. महानिदेशक
भारतीय मानक संस्था
नई दिल्ली ।
12. श्री के०एस० लक्ष्मीनारायण
एवरी इण्डिया लिमिटेड
नई दिल्ली ।
13. प्रधान
विज्ञान तथा गणित शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली ।
14. प्रधान
वर्कशाप विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली ।
15. बिस्तीय सलाहकार
खाद्य और भागरिक पूर्ति मंत्रालय
नई दिल्ली ।
16. श्री आर०पी० बघवा
निदेशक
इलक्ट्रोनिक्स विभाग
भारत सरकार
नई दिल्ली ।
पदेन सदस्य
17. निदेशक
विधिक माप विज्ञान
नागरिक पूर्ति विभाग
नई दिल्ली ।

- पदेन संयोजक
18. प्रधानाचार्य
भारतीय विधिक माप विज्ञान संस्थान
रांची ।

डी०के० मिश्रा, अवर सचिव

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 19 अक्तूबर 1984

संकल्प

सं० पी० 11016/27/84-एम० सी० एच--काऊंटेस
आफ डफरिन फण्ड की सलाहकार समिति की अवधि समाप्त होने
पर, जो स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के 30-4-82
के संकल्प संख्या पी० 11016/1/80-एम० सी० एच० में पुन-
गठित की गई थी, भारत सरकार ने तत्काल प्रभाव से इस समिति
का पुनर्गठन किया है ।

इस पुनर्गठित समिति की संरचना इस प्रकार होगी :—

- | | |
|--|------------|
| 1. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण उपमन्त्री | अध्यक्ष |
| 2. अपर सचिव एवं आयुक्त (प० क०) | सदस्य |
| 3. अपर सचिव (स्वास्थ्य) | सदस्य |
| 4. वित्त मंत्रालय के प्रतिनिधि | सदस्य |
| 5. उप-महानिदेशक (चिकित्सा) | सदस्य |
| स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, नई दिल्ली | |
| 6. नर्सिंग सलाहकार, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय | सदस्य |
| 7. प्रधानाचार्य, लेडी हार्डिंग मेडिकल कालेज और
अस्पताल, नई दिल्ली । | सदस्य |
| 8. प्रधानाचार्य, राजकुमारी अमृत कौर कालेज
ऑफ नर्सिंग, नई दिल्ली । | सदस्य |
| 9. श्रीमती मोनिका दास,
संसद सदस्या, 23 कैनिंग लेन, नई दिल्ली | सदस्या |
| 10. श्रीमती संयोगिता राने,
संसद सदस्या, 92 नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली | सदस्या |
| 11. श्रीमती कैलाश पति, संसद सदस्या,
32, नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली | सदस्या |
| 12. सहायक आयुक्त (एम० सी० एच०)
परिवार कल्याण विभाग | सदस्य सचिव |

2. यह सलाहकार समिति—काऊंटेस ऑफ डफरिन
फण्ड की आय का उपयोग करने और उसका प्रबन्ध करने में
केन्द्रीय सरकार को सलाह देगी ।

3. इस समिति का कार्यकाल दो वर्ष है ।

4. सरकारी सदस्यों के यात्रा-भत्ते और मंहगाई-भत्ते पर
होने वाला खर्च उसी स्त्रोत से पूरा किया जाएगा जहां से उन्हें,
वेतन मिलता है । जो गैर सरकारी सदस्य समिति की बैठकों में
भाग लेंगे उनका यात्रा भत्ता और मंहगाई भत्ता ए०आर० 190
में को गई व्यवस्थाओं और भारत सरकार द्वारा उसके अन्तर्गत
समय-समय पर जारी किए गए आदेशों से अनुसार नियमित किया
जाएगा ।

आदेश

ऊर्जा मंत्रालय

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति सभी राज्य सरकारों/संघ शासित क्षेत्रों को भेज दी जाये। यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत के राजपत्र में सूचनार्थ प्रकाशित किया जाए।

(पेट्रोलियम विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 25 अक्टूबर 1984

आदेश

एस० के० सुधाकर, संयुक्त सचिव

विषय : कच्छ क्षेत्र "डी" संरचना के लिए 687 वर्ग किलो मीटर के परिमित क्षेत्र के लिए तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग (अपतटीय) को पेट्रोलियम अन्वेषण लाइसेंस की स्वीकृति।

शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय

(संस्कृति विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 16 नवम्बर 1984

संकल्प

सं० एक० 3-27/84-सी० एच०-5—संग्रहालय के कार्यकरण के संबंध में प्रमुख प्रश्नों से संबंधित मार्गदर्शी रूप रेखाएं उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली के लिए एक परामर्शी समिति गठित करने का निर्णय किया गया है। समिति की संरचना इस प्रकार होगी :—

अध्यक्ष प्रो० लोकेश चन्द्र

सदस्य

1. प्रो० बी० बी० लाल
2. श्री के० बी० सौन्दर राजन
3. श्रीमती देवान्गना देसाई
4. श्री आर० सी० अग्रवाल
5. डा० एस० सी० काला
6. प्रो० मुक्त राज आनन्द
7. श्रीमती पुपुल जयाकार
8. श्री माधवराव सिधिया
9. प्रो० के० डी० बाजपेयी
10. प्रो० डी० पी० अग्रवाल
11. श्री एस० पी० राव
12. प्रो० संखी चौधरी
13. प्रो० के० शिवराम कारन्थ
14. श्री जी० आर० संतोष
15. श्री बदरुद्दीन तैयबजी
16. श्री जी० के० अरोड़ा
प्रधान मंत्री के अपर सचिव
17. श्री सी० एल० आनन्द
संयुक्त शिक्षा सलाहकार
शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय
18. डा० एल० पी० सिंहारे
निदेशक राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।

2. समिति की वर्ष में कम से कम एक बार बैठक होगी।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि सामान्य सूचना के लिए संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

सरला ग्रेवाल, सचिव

सं० ओ-12012/43/83-प्रोड०—पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस नियम 1959 के नियम 5 के उपनियम (1) के (खण्ड 1 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद् द्वारा तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग। तेल भवन देहरादून (जिसको इसके बाद आयोग कहा जाएगा) को कच्छ क्षेत्र "डी" संस्थान के लिए 687 वर्ग किलो मीटर के परिमित क्षेत्र में पेट्रोलियम मिलने की सम्भावना के लिए पेट्रोलियम अन्वेषी लाइसेंस 15-11-83 से चार वर्ष के लिए देने की स्वीकृति देती है। क्षेत्र का विवरण इसके साथ संलग्न अनुसूची "क" में दिए गए हैं।

लाइसेंस की स्वीकृत निम्नलिखित शर्तों पर है :—

(क) अन्वेषण लाइसेंस पेट्रोलियम के संबंध में होगा।

(ख) यदि अन्वेषण कार्य के दौरान कोई खनिज पदार्थ पाए गए तो आयोग पूर्ण व्योरे के साथ उसकी सूचना केन्द्रीय सरकार को देगा।

(ग) स्वत्व शुल्क (रायल्टी) निम्नलिखित दरों पर ली जाएगी :

(i) समस्त अशोधित तेल तथा केसिंग हैड कडेन्सेट पर 61 रूपए प्रति मी० टन या ऐसी दर जो समय-समय पर केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्धारित की जाएगी।

(ii) प्राकृतिक गैस के संबंध में ये दर केन्द्रीय सरकार द्वारा समय-समय पर निर्धारित दर के अनुसार होगी।

स्वत्व शुल्क (रायल्टी) की अदायगी, पेट्रोलियम विभाग, नई दिल्ली के वेतन तथा लेखा अधिकारी को दी जायेगी।

(घ) आयोग लाइसेंस के अनुसरण में प्रत्येक माह के प्रथम 30 दिनों में गत माह से प्राप्त समस्त अशोधित तेल की मात्रा, केसिंग हैड कडेन्सेट और प्राकृतिक गैस की मात्रा तथा उसका कुल उचित मूल्य दर्शाने वाला एक पूर्ण तथा उचित विवरण केन्द्रीय सरकार को भेजेगा। यह विवरण संलग्न अनुसूची "ख" में दिये गये प्रपत्र में भरकर देना होगा।

(ङ) पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस नियम, 1959 के नियम II की आवश्यकता के अनुसार आयोग 6000 रुपये की धनराशि प्रतिभूति के रूप में जमा करेगा।

(च) आयोग प्रतिवर्ष लाइसेंस के सम्बन्ध में एक शुल्क के सम्बन्ध में एक शुल्क का भुगतान करेगा जिसकी संगणना

प्रत्येक वर्ग किलोमीटर या उसके किसी अंश जिसका लाइसेंस में उल्लेख किया गया हो, निम्नलिखित दरों पर की जायेगी।

1. लाइसेंस के प्रथम वर्ष के लिये 4 रु०
2. लाइसेंस के द्वितीय वर्ष के लिये 20 रु०
3. लाइसेंस के तृतीय वर्ष के लिये 100 रु०
4. लाइसेंस के चतुर्थ वर्ष के लिये 200 रु०

5. लाइसेंस के नवीकरण के प्रथम और द्वितीय वर्ष के लिए 300 रुपये।

(छ) पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस नियम, 1959 के नियम 11 के उपनियम (3) की आवश्यकतानुसार आयोग की अन्वेषण लाइसेंस के किसी क्षेत्र के किसी क्षेत्र के किसी भाग को छोड़ देने की स्वतंत्रता सरकार की दो माह के नोटिस के बाद होगी।

(ज) आयोग केन्द्रीय सरकार को मांग पर उसको तत्काल तेल तथा प्राकृतिक गैस अन्वेषण के अन्तर्गत पाये गये समस्त खनिज पदार्थों के सम्बन्ध में भूवैज्ञानिक आंकड़ों के बारे में एक पूर्ण रिपोर्ट गुप्त रूप से देगा तथा हर छः महीने में निश्चित रूप से केन्द्रीय सरकार को समस्त परिचालनों व्यय तथा अन्वेषण कार्यों के परिणामों के बारे में सूचना देगा।

(झ) आयोग समुद्र की तलहटी या और उसके धरातल पर आग लगने सम्बन्धी निवारक उपायों की व्यवस्था करेगा तथा आग बुझाने हेतु हर समय के लिए ऐसे उपकरण, सामान तथा

साधन बनाये रखेगा और तीसरी पार्टी और/या सरकार को उतना मुआबजा देगा जितना कि आग लगने से हुई हानि के बारे में निर्धारित किया जायेगा।

(त्र) इस अन्वेषण लाइसेंस पर तेल क्षेत्र (नियन्त्रण और विकास) अधिनियम, 1948 (1948 का 53) और पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस नियम 1959 के उपबन्ध लागू होंगे।

(ट) पेट्रोलियम अन्वेषण लाइसेंस के बारे में आयोग केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित एक ऐसा दस्तावेज भर कर देगा जो अप्रतटीय क्षेत्रों के लिये व्यवहार्य होगा।

(ठ) आयोग को खुदाई/अन्वेषण कार्य संचालनों/सर्वेक्षण के दौरान एकत्र किये गये सतही नमूने, समुद्र गांभीर्य मापीय बिजली धारा और चुम्बकीय सम्बन्धी आंकड़े सामान्य तौर पर रक्षा मंत्रालय/नौसेना मुख्यालय को प्रस्तुत करने चाहिए।

(ड) क्योंकि भारत और पाकिस्तान के बीच मध्यान्तर रेखा के बहुत निकट कच्छ क्षेत्र "डी" संरचना स्थित है इसलिये सरकार को परेशानी से बचाने के लिए इस क्षेत्र का सर्वेक्षण करते समय तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग द्वारा अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए जिससे तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग के जलपोत मध्यान्तर रेखा के पश्चिमी भाग को पार करके न भटक जायें।

(भारत के राष्ट्रपति के आदेश से तथा उनके नाम पर)।

पी० के० राजगोपालन
उत्क अधिकारी

अनुसूची—“क”

तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग के लिए पेट्रोलियम अन्वेषण लाइसेंस के० डी० संरचना जिसका क्षेत्रफल 687 वर्ग किलोमीटर (अप्रतटीय) है के भौगोलिक निर्देशांक —

	अक्षान्तर	देशान्तर
“ए”	67° 58' 41"	23° 30'
“बी”	68° 13'	23° 30'
“सी”	67° 58' 49"	23° 14' 30"
“डी”	68° 12' 50"	23° 14' 10"

अनुसूची “ख”

अशोधित तेल, केसिंग कन्वेन्मेन्ट तथा प्राकृतिक गैस के उत्पादन तथा उसके मूल्य सहित भासिक वितरण

के लिए पेट्रोलियम अन्वेषण लाइसेंस

क्षेत्रफल वर्ग किलोमीटर (लगभग)

माह तथा वर्ष

क—अशोधित तेल

कुल प्राप्त किलो लीटरों की सं०	अपरिहार्य रूप से खोये अथवा प्राकृतिक जला- शय को लीटाये किलो लीटरों की सं०	केंद्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित पेट्रोलियम अन्वेषण कार्य हेतु प्रयोग किये गये लीटरों की सं०	कालम 2 और 3 को घटाकर प्राप्त किलो लीटरों की सं०	टिप्पणी
--------------------------------	--	--	---	---------

ख—केसिंग हैड कन्डेन्सेट

प्राप्त किये गये कुल किलो लीटरों की सं०	अपरिहार्य रूप से खोये अथवा प्राकृतिक जला- शय को लौटाये किलो लीटरों की संख्या	केंद्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित पेट्रोलियम अन्वेषण कार्य हेतु प्रयोग किये गये किलो लीटरों की संख्या	कालम 2 और 3 को घटाकर प्राप्त किलो लीटरों की संख्या	टिप्पणी
1	2	3	4	5

ग—प्राकृतिक गैस

कुल प्राप्त घन मीटरों की संख्या	अपरिहार्य रूप से खोये अथवा प्राकृतिक जलाशय को लौटाये गये घन मीटरों की संख्या	केंद्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित पेट्रोलियम अन्वेषण कार्य हेतु प्रयोग किये गये घन मीटरों की संख्या	कालम 2 और 3 को घटाकर प्राप्त घन मीटरों की संख्या	टिप्पणी
1	2	3	4	5

एतद्वारा मैं, श्री— सत्य निष्ठापूर्वक घोषणा एवं पुष्टि करता हूँ कि इस विवरण में दी गई सूचना पूर्ण रूपेण सत्य और सही है, उसे सही समझते हुए मैं शुद्ध अन्तःकरण से सत्य निष्ठा से यह घोषणा करता हूँ।

हस्ताक्षर—

भारत के राष्ट्रपति के आदेश से तथा उनके नाम पर।

पी० के० राजगोपालन, डैस्क अधिकारी

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 23rd November 1984

No. 115-Pres[84.—The President is pleased to approve the award of Sarvottam Jeevan Raksha Medal to the undermentioned persons :—

1. Shri Ramesh,
H-2/686 Jahangir Puri,
Delhi.

On the 4th September, 1982 Shri Ramesh, aged about 10 years, was returning to his house in Jahangir Puri. When he was passing under the Railway flyover at Anand Parbat (Sarai Rohilla), he saw an old woman walking on the railway track unaware of an approaching train endangering her life. He at once rushed and pushed the old woman away from the track with a view to save her from being crushed under the train. But in this process he could not get himself out of the line of the approaching train and was seriously injured. He lost his right arm and received serious injuries on his body.

Shri Ramesh displayed great presence of mind, conspicuous courage and promptitude in saving the life of an old woman unmindful of the very great danger involved to his own life.

2. Baba Ajit Singh Nihang,
Village Arniwala,
Police Station Makhu,
District Ferozepur.

On the 19th November, 1983, Baba Ajit Singh alongwith one Shri Harbans Lal Bhatia, a resident of Makhu was travelling in a bus from Amritsar to Moga. After a journey of only one and half Kilometres from Taran Taran, a young persons placed his revolver at the driver's head signalling him to stop. Within seconds several terrorists were on their feet, waving revolvers, sten guns and pistols and took up positions at the front and rear doors. The terrorists started roughing up the Hindu passengers and robbed them of their cash and valuables. The terrorists snatched away conductor's money bag and kicked him. Near Naushehra the bus was stopped and reversed. The four Hindus were dragged out and shot one by one. When the terrorists demand Shri Harbans Lal's wrist watch, he promptly gave it. Baba Ajit Singh intervened to say that Shri Harbans Lal be spared as he was like his own son. The pleadings were ignored and one of the terrorists struck Shri Harbans Lal with the butt of his gun on the head, causing a bleeding injury. When the remaining four passengers were being dragged out Baba Ajit Singh embraced Shri Harbans Lal tightly, seeking mercy. At this one of the assailants took pity and Shri Harbans Lal was left off.

Baba Ajit Singh, thus, saved the life of his Hindu brother from the clutches of the terrorists by displaying conspicuous courage and presence of mind at very great danger to his own life.

No. 110-Pres/84.—The President is pleased to approve the award of UTTAM JEEVAN RAKSHA PADAK to the undermentioned persons :—

1. Shri Raghbir Singh, (Posthumous)
Constable No. 596 HSR,
Village Morkhari, P.S. Sampla
District Rohtak, Haryana.

On the 31d July, 1981, two boys Ramesh Kumar and Navinder Kumar went for a bath in local well. They lowered themselves with the help of a rope. After taking bath when they were coming out of the well with the help of the rope, they lost control and fell down into the well. On making a hue and cry Shri Raj and Shri Ishwar residents of the same village rushed to the spot. They got into the well where the boys were just losing consciousness and grip over the rope. They were also overtaken by the poisonous gas. Constable Raghbir Singh who happened to be on leave in his village came to the site and saw four persons striving for their lives. In spite of the warning given by Shri Raj and Ishwar about the presence of poisonous gas in the well, Constable Raghbir Singh got into the well in a bid to save the lives of the four persons. Constable Raghbir Singh helped the villagers to take out Shri Ishwar and Shri Raj by supporting them in the well but he could not save the two boys. He himself was drowned as he became unconscious due to the presence of poisonous gas in the well.

Constable Raghbir Singh showed exceptional courage, promptitude and devotion to duty without caring for the great danger involved to his own life.

2. Shri Ghulam Hassan Pandow (Posthumous)
Now Kadel, Srinagar,
Jammu & Kashmir

On the 11th April 1983, Shri Ghulam Hassan Pandow, a seasonal shawl merchant hailing from Srinagar came to collect dues from the customers and was waiting at Kalabagan bus stop at B1 Saha Road Calcutta. Meanwhile a fire broke out at the residence-cum-kerosene oil shop of Shri Chandulal Shaw and the attached grocery-cum-stationary shop of Shri Sisir Choudhuri. This pathetic scene attracted Ghulam Hassan Pandow who rushed to the spot. He found that 2 minor children of said Shaw were trapped in the burning building and were screaming helplessly. Shri Pandow immediately jumped into the blazing house and rescued the children unhurt and unburnt. However he himself sustained serious burn injuries on his person. He was removed to M R Banerji hospital for treatment where he succumbed to his injuries.

Shri Ghulam Hassan Pandow displayed exemplary courage, promptitude and selflessness in saving the lives of two children without caring for the great danger involved to his own life.

3. Shri Madathiparambil Guseph Augustine, Shri Guseph, Madathiparambil House, Edathalalara
Alwaye, Ernakulam District, Kerala.

(Posthumous)

On the 26th November, 1981 the driver of a bus named 'Kavitha' carrying about 40 passengers on its journey from Angamaly to Manjeri in Ernakulam district lost control and hit against an electric post on the side of the road at Karinganapadam. The ill-fated bus turned up side down over to the paddy fields on the road side. Shri Augustine, who managed to get out of the bus pulled out some passenger from the bus. He then tried to rescue the driver who was caught between the steering wheel on his seat as a result of the impact by breaking open the front glass of the bus using a piece of rubble. The top of the electric post hit by the bus had been broken and live wire had come into contact with the stay wire which was touching the water in the paddy field. Shri Augustine did not know the danger posed by the live stay wire touching the water. In the process of rescuing the driver, his foot touched the water in the paddy field by accident and he was electrocuted. In the dying moment he cried out to the passengers about the electric shorting which prevented others from coming into contact with the water.

Shri Madathiparambil Guseph Augustine displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of several people without caring for the great danger involved to his own life.

3—351 G1/84

4. Master Alikada Anand Khan, Alikada Kalpeni Island, Lakshadweep, Kavaratti

On the 25th February, 1983, Master Anjad Khan (aged 5 years) and Master Mohammed Rafikh, G.K., (aged 7 years) were sitting on the top of a 15 feet deep well. Accidentally Master Rafikh slipped and was on the point of falling into the well. Master Anjad Khan reached him in no time and held him by one hand. In this process Master Khan had to stop down and the well by placing his one leg outside the narrow well of the well and the other inside. Master Khan held Master Rafikh firmly hanging in the well at the risk of his own life as he being younger could have fallen into the well. In this situation, Master Khan started crying with a view to attract nearby people for help. People in the nearby mosque rushed to the spot and rescued Master Mohammed Rafikh.

Master Alikada Anjad Khan displayed presence of mind, courage and promptitude in saving a life without caring for the great danger involved to his own life.

5. Shri Dagade Ramesh Haribhan
Shri Shri Haribhan Chimat, Dagade
Janata Nagar, Navi Khed,
Pure-6, Maharashtra.

(Posthumous)

On the 24th July, 1982 a fire had broken out in a grocery shop in New Khedli area of Pune. The fire was spreading towards adjoining huts in which Yacub Sheikh and his family of four members were fast asleep. Shri Ramesh Dagade, a student of tenth standard broke open the back door and rescued Yacub Sheikh and his family. He returned to the hut to cut off the fire but unfortunately he was electrocuted and lost his life.

Shri Dagade Ramesh Haribhan showed exemplary courage and promptitude in saving four lives from fire and lost his own life in the process.

6. Kumar Chandrasekhar Medhulur Kalskar
Kisan Nagar No. 2, Chaitanya, Nuvas, Wagale Estate,
Thane Tal. & Dist. Thane, Maharashtra

On the 19th February, 1979, when Jayshree, aged 5 years, had gone to answer the nature's call she fell accidentally into the latrine tank sewage (W.C.) of the Municipal latrines. The girl instead of using the latrine had chosen to sit on the edge of the W.C. tank which was full of night sewage and slipped into it. On hearing the hue and cry of the girl, Kumar Chandrasekhar rushed to the spot and without showing any hesitation got into the 7'6" deep sewage tank. He succeeded in getting Jayshree's hand and pulled her out from the W.C. tank. Jayshree was then removed to Dr. P. T. Karsnal's Clin. in Wagle Estate where she recovered after treatment.

Kumar Chandrasekhar Medhulur Kalskar displayed courage, promptitude and sense of duty in rescuing a girl from being drowned in the W.C. tank at great danger to his own life.

7. Master Rahul Pramod Udhoi
'Snehal' Khare Town Dharwad
Nagpur, Maharashtra

On the 5th May, 1982 some boys were enjoying their swim at the Handa, High School Swimming Pool in Ramdaspeth, Nagpur. Suddenly a boy fell into the pool. Shri Tushar Muley, aged 15 years, went down the pool as he did not know swimming. He had at the bottom of the swimming pool and everyone came out of the pool thinking that the boy had drowned. It was at this critical juncture that young Shri Rahul Pramod Udhoi, aged 11 years, swung himself into action, realising that the boy would be drowned. He rushed out from the dressing room where he was changing his suit to go home and jumped into the pool. He caught Shri Tushar Muley by his hair and brought him up within seconds. Shri Muley was still breathing. After he was given first aid he required no further attention.

On the 15th May, 1982 Shri Rahul saved another boy Shri Abhinav Vaidya from drowning in the same pool not realising the danger to his own life.

Master Rahul Pramod Udhoji thus displayed courage and promptitude in saving two lives from drowning unmindful of the very great danger involved to his own life.

8. Shri Hmangaihkhima.
Hmunpui (Vengther), Aizwal,
Mizoram.

On the 27th December, 1982, Pu Kapthanga's house caught fire. Pu Kapthanga and his wife were staying overnight in their ihum leaving behind their three children in the house. At the time of incident, only two children were in the house. They could not get out because the main entrance was ablaze. The windows were so high that it was impossible for the children to jump out through them.

On hearing the sound of fire, Shri Hmangaihkhima went to see what was happening. He found the house on fire and heard scream of the children from the house. He tried to at the ghat, tried to rescue her, but in vain. In their attempt dive into the house but had to retreat as the heat was unbearable. So he took his dao and somehow cut the wall making a hole and pulled the children out and saved their lives. He sustained severe burns while rescuing the children and was admitted to the hospital where he was treated for over two weeks.

Shri Hmangaihkhima displayed courage and promptitude in saving the lives of two children from a burning house unmindful of the great danger involved to his own life.

9. Shri Virender Singh
S/o Shri Jot Singh, Bhutton Village
Panchali Patti, Iohana, Tehsil Karan Prayag,
Distt. Chamoli, Uttar Pradesh

On the 11th August, 1982, Shri Gyan Singh was swept away by the fast current of the river Ram Ganga at Dadri Dali Tehsil Karan Prayag. Being a mountain ravine it contains hard and pointed rocks and sometimes the champion swimmers are trapped by these hurdles. In such difficult circumstances Shri Virender Singh showed courage and sense of humanity. He swam half kilo metre in the river Ram Ganga and saved the life of Shri Gyan Singh.

Shri Virender Singh thus displayed courage and promptitude in saving a life from being drowned in the river at great danger to his own life.

10. Shri Kujumon Alias John Philipose,
Chirakkakathu House,
Pandanad Kottayam Muri,
Pandanad Village, Chengannur Taluk,
Alleppey District Kerala.

On the 27th July, 1983, an 11 years old girl named Iizzy while bathing at the bathing ghat near Adichikkandam Devi Temple in Alleppey district accidentally slipped into the Pampa river. On seeing the girl almost drowning, her two aunts, Thankamma and Valsamma, who were also bathing at the ghat, tried to rescue her, but in vain. In their attempt they fell into the river and all the three were almost drowning in the water. The depth of the water at the place of the incident was about 200 feet and the bottom of the river was muddy. On hearing the cry of a woman who was on the bank, Shri John Philipose who was taking bath on another ghat rushed to the spot. By that time all the three persons had been drifted away by the strong current of water. Without considering the danger posed to his own life, Shri John Philipose jumped into the river swam towards Thankamma and caught hold of her by the hair. But then Valsamma clung on to him and Shri John Philipose along with the two ladies began to sink in the water. At this juncture displaying great presence of mind, Shri John Philipose kicked off Valsamma. Thus freed, he saved Thankamma first and then Valsamma. By this time the girl Iizzy had sunk to the muddy bottom of the river. Shri John Philipose located her with his legs and dislodged her from the mud and saved her life also.

Shri Kujumon alias John Philipose displayed courage, presence of mind and promptitude in saving three lives from drowning regardless of the great danger posed to his own life.

11. Shri Sundar Ghiuria,
Village Jhodanga,
P. S. Boipariguda,
Distt. Koraput, Orissa.

On the 18th August, 1983, the ferry boat of Jhodanga ferry-ghat of the river kollab in the district of Koraput capsized due to the strong current and 5 women passengers were being drowned and swept away by the rushing waves of the river. At that time Shri Sundar Ghiuria, who was sitting on the bank of the river and fishing, saw this and at once jumped into the river. He first rescued two women who were nearer to the bank. He found the other three clinging to one another in a sub-conscious state and being swept away by the strong current of the river. The depth of the river at the place where the boat was capsized was about 15' to 20 feet. Shri Ghiuria by swimming under the water reached the drowning women. One of them caught his left hand and the other his loin cloth and the third one sat on his back catching his neck. This made the situation worse and his own life was also in danger. With great difficulty he brought all the three to the bank swimming by one hand.

Shri Sundar Ghiuria displayed courage and promptitude by saving the lives of 5 women from drowning at great risk to his own life.

No. 117-Pres.84.—The President is pleased to approve the award of Jeevan Raksha Padak to the following persons :—

1. Shri Baliyambra Puttattu Moideen, (Posthumous),
C/o Smt. Areepottammal Pathumma Umma,
Areepottammal, P.O. Makkam,
Kozhikode District, Kerala.
2. Shri Ambalakandi Abdul Gafoor,
Ambalakandi, Chennamangalur Desam,
Thazhakode Village, P.O. Channamangalur,
Kozhikode District, Kerala.

On the 15th July, 1982, a country boat carrying 18 persons capsized in the middle of the Chalivar River (Fravanjipuzha) in Kozhikode District. As it was rainy season, the river was in spate and had a strong current. All the passengers, who fell into the river, began to struggle for their lives. Shri B. P. Moideen, who knew swimming was one of them. Shri Moideen could have swam to safety but seeing one woman by name Aysa and her 2½ years old child Master Irshad struggling in the river made a valiant bid to save them by holding and keeping them afloat, but was unable to get them to the shore because of the swift current. Shri Abdul Gafoor, who happened to be bathing on the river side at that time saw Shri Moideen holding the two and floating unable to bring them to the shore. He immediately swam towards the woman and the child and brought them to the bank of the river. Shri Moideen became tired in this struggle and while swimming towards the shore he got himself entangled in a whirlpool and was drowned. Out of 18 passengers in the boat, three including Shri Moideen lost their lives and the rest 15 escaped death by swimming to safety or with the partial help rendered by the people gathered on the bank of the river.

Shri Baliyambra Puttattu Moideen and Shri Ambalakandi Abdul Gafoor thus displayed courage of the highest order in their bid to save a drowning woman and her child at the cost of their own lives.

3. Kumari Suiatha Balakrishnan,
D/o Shri Balakrishnan, Mangalathu Veedu,
Kaniyamattom, Thodupuzha East P. O.,
Idukki District, Kerala.

On the 9th March, 1983, a group of students of Standard Fifth of the Govt. Upper Primary School, Kaniyamattom (Idukki District) after their mid-day meals went to the bank of Thodupuzha river, close by to wash their tiffin carriers. While they were washing their tiffin carriers, Baby Geetha J. Nair, aged 10 years accidentally fell into the river. Drawn away by the strong down stream, she began to struggle for her life. The students on the bank were frightened and some of them cried aloud for help. Kumari Suiatha Balakrishnan, one among the students, jumped into the water, swam towards the drowning Baby Geetha who was 4 metres away from the river

side, caught hold of her and brought her back to the river bank. The depth of water at the place of the incident was about 3 metres.

Kumari Sujatha Balakrishnan thus displayed courage and promptitude in saving the life of a girl from drowning unmindful of the risk involved to her own life.

4. Master Cherthedathu Kumaran Baburaj,
S/o Shri Cherthedathu Kumaran,
Kallattupuzha, P.O. Anthikad,
Trichur Taluk, Trichur District,
Kerala.

On the 15th March, 1981, Kumari Lisha, aged 7 years, of Padiyam Village, Trichur District fell into a 15 feet deep well while drawing water from it. The well had 5 feet of water at the time of the incident. On hearing the cry of the girl in distress, some of the local people gathered around the well but they could not do anything to save the girl. Master Baburaj, aged 15 years, who came near the well on getting the information jumped into it. On his request, the onlookers descended a rope in the well. Quickly Master Baburaj caught hold of the girl and held her above the water level. While climbing up alongwith Kumari Lisha with the help of the rope, both of them fell into the well. At that stage Shri Ashokan S/o Shri Maruthayi Kavi got into the well and with this help, Master Baburaj brought Kumari Lisha out of the well.

Master Cherthedathu Kumaran Baburaj displayed conspicuous courage and promptitude in saving Kumari Lisha from drowning at a great risk to his own life.

5. Kumari Valiyakath Kochunny Kadeer,
D/o Valiyakath Kochunny,
P.O. Peringottukara,
Thanniam Village, Trichur District,
Kerala.

On the 4th June, 1981, two brothers by name Yoosuff, aged 23 years and Hakkim, aged 19 years, sons of Shri Elledathuparambil Abdul Khadar, were bathing in the shallow region of a tank in Thanniam Village of Trichur Taluk. Accidentally, Hakkim slipped and got into the deep zone about 15 feet deep and began to struggle for his life. His elder brother Yoosuff who tried to save Hakkim also fell into the deep water and both of them started drowning as none knew swimming. Kumari Kadeer (14 years) who was then standing near the tank saw the two struggling for their lives and ran to the spot. She jumped into the tank and dragged Hakkim to the bank. Then she cried aloud. People who gathered hearing her cry fished Yoosuff also from the water in a serious condition. He was taken to the hospital but his life could not be saved.

Kumari Valiyakath Kochunny Kadeer displayed courage and promptitude in saving a life unmindful of the risk involved to her own life.

6. Master Aykarakunnappuzha Krishnan Nair Ashok Kumar, S/o Shri Neelakantan Nair,
Aykarakunnappuzha Veedu Nedumpravar,
Thottappuzhaserry Village,
Thiruvalla Taluk, Alappuzha District,
Kerala.

On the 25th October, 1981, Master A. K. Ashok Kumar came to the 'Nochikkattu Madam Kadavu' on the bank of the river Pamba to take bath. On hearing the cry of a frightened woman, he rushed to the spot. There he saw a child sinking in water about 15 feet away from the river bank and being swept away by the swift current. There was whirlpool due to the bend of the river around a projecting bund and the depth of the river at the spot was about 15 feet. In a spontaneous action, Master Ashok Kumar jumped into the river, swam toward the child and brought him to the bank.

Master Aykarakunnappuzha Krishnan Nair Ashok Kumar displayed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a child without caring for his own life.

7. Shri Thanda Parambath Mohamed
S/o Shri Mavan, Thandaparamba
P.O. Kadavathur, Cannanore District,
Kerala.

On the 22nd February, 1983, Kumari P. P. Pushpa, a student of Ninth Standard of Kolavallur High School in Cannanore District along with other girls was crossing the wooden foot bridge on Naremal stream. She accidentally fell into the stream. The depth of water at that place was about 10 metres and there was a strong under current. The other girls who were crossing the bridge with her raised cries for help. Shri I. P. Mohamed a student of the same school who was coming the same way heard the cries and jumped into the stream to rescue the drowning girl. He caught hold of her and brought her safely to the bank of the stream.

Shri Thanda Parambath Mohamed displayed courage and promptitude in saving the life of a girl from drowning unmindful of the risk involved to his life.

8. Shri Kizhakkuvettil Kunhimon Vijayan,
S/o Shri Kizhakkuvettil Kunhimon Avanur,
Near Athani, Trichur District, Kerala.

On the 18th July, 1981, Shrimati Mary, while walking with her child through a narrow path-way close to the wall of her house, accidentally slipped and fell into the well which was very near to the wall of the house. The well was 10 feet deep with 25 feet of water within. On hearing the cries of the child, local people gathered around the well but none dared to save the sinking mother and the child. Shri K. K. Vijayan, a neighbour also rushed to the spot on hearing the commotion. He entered the well at once with the help of a rope. He caught hold of the child first and clung to the rope. They were lifted out by the people who had gathered around the well. Repeating this exercise and with the assistance of the local people he brought the mother also out of the well but she was dead by that time.

Shri Kizhakkuvettil Kunhimon Vijayan displayed conspicuous courage and promptitude in saving a child from drowning at the great risk to his own life.

9. Shri Bhagwant Bapurao Shapekar,
At Post Moha, Taluka & District Yavatmal,
Maharashtra.

On the 16th May, 1982, when Shri Bhagwant Bapurao Shapekar, a member of Home Guards Organisation, was returning to village Yarat for his private work after attending a Home Guard Parade at Yavatmal, he observed that truck bearing No. MHV-1800 had fallen in a well near the road at Talegaon. The well is 25 feet deep from the ground level. Shri Shapekar rushed to the spot and without any loss of time engaged himself in rescue operation. He found a rope in another truck standing nearby and tied one end of the rope to the window of the truck and got down into the well holding the other end of the rope and rescued three men and one woman from the well by bringing them out one by one on his back. Although the truck was in the well, there was some space to get into the well which Shri Shapekar used for taking out entrapped persons from the well. In the rescue act he sustained minor injuries. Besides these four persons who were pulled out from the well, 3 more persons were injured in the same accident and they were thrown on the ground. He brought all the 7 persons to the road side and took them for medical treatment to the Yavatmal Hospital by a State Transport Bus which happened to pass that way. In this way he saved lives.

Shri Bhagwant Bapurao Shapekar displayed conspicuous courage, devotion to duty and presence of mind in saving the lives of seven persons without caring for his own life.

10. Shri Ramesh Shankarrao Ambhore,
At P.O. Jawala Bazar, Ta. Basmath,
District Parbhani, Maharashtra.

On the 2nd April, 1982, the water of the main canal was released into the Purna Canal near Jawala Bazar. Shri Ramesh alongwith his two friends was passing by the canal. He heard one girl crying and shouting for help. He ran towards her and found another girl, aged 7/8 years, who had fallen into the canal water floating alongwith heavy flow of water. He immediately jumped into the water, rescued the drowning girl and brought her to the safety of the canal bank.

Shri Ramesh Shankarrao Ambhore displayed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a girl from drowning without caring for the risk involved to his own life.

11. Shri Dilip Yaduraj Chavan,
22-Saraswati Ganesh Colony,
474, Sadar Bazar (Near Tawada Hospital),
Distt. Satara, Maharashtra.

On the 20th July, 1982, one Kumari Sulochana Baburao Surve, aged 13 years, of Village Nunc in Satara District slipped into a well having 25/30 feet deep water. Many people who had gathered on the spot could not muster enough courage to save the drowning girl but shouted for help. Shri Dilip Chavan, a college student, aged 19 years, while on his way to the college heard the shouts for help. He rushed to the spot and without caring for the consequences, instantaneously jumped into the well and rescued the girl.

Shri Dilip Yaduraj Chavan displayed courage and promptitude in saving the life of a girl from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

12. Shri Perurkar Prakash Keshawrao,
C/o Shri P. N. Zade, Near Durga Devi Mandir,
Tulsibag Road, Mahal, Nagpur,
Maharashtra.

On the 26th August, 1981, the house of one Shri Shankar Pandurang Khode collapsed in Mahal area of Nagpur due to incessant and heavy rains and two ladies and a child were buried under the debris. A steel almirah on the first floor gave way and was on the brink of falling over the debris. Had it fallen, the three said persons would have met with instantaneous death. Shri Perurkar, a volunteer of Nagpur Institute for civil preparedness, entered the house and rescued them from the debris at the risk of his own life. Later on the fire personnel and the police arrived on the scene and took charge of the site.

Shri Perurkar Prakash Keshawrao displayed conspicuous courage and promptitude in saving 3 lives without caring for the risk involved to his own life.

13. Dr. Vishwanath Paikrao,
Village Janona, Taluka Pusad,
District Yavatmal, Maharashtra.

On the 21st October, 1981, Shri Vijay Pande of Public Works Division, Pusad, went in a departmental truck to village Janona for fetching 'Murum' alongwith other labourers. While the labourers were busy in loading Murum, Shri Pande alongwith the cleaner on the truck went to Janona Tank for taking a bath. Shri Pande entered deep waters. While swimming he got exhausted and when he found that he was unable to swim back to the bank, he raised cries for help. The cleaner also raised cries for help since he was not a swimmer. Dr. Vishwanath Paikrao who happened to pass by that road heard them. He immediately rushed to the spot and without any loss of time swam over to the drowning person and took out him from the tank in an unconscious state. Dr. Paikrao sucked water from the stomach of Shri Pande and provided artificial respiration. He was taken to the hospital of Dr. Bhandari in Pusad for treatment where he was brought to consciousness.

Dr. Vishwanath Paikrao acted with great courage and diligence in saving the life of Shri Vijay Kumar Pande from drowning at the risk of his own life.

14. Shri Sita Ram Bagia,
Village Bhanpurkalan, Tehsil Jamwa,
District Jaipur, Rajasthan.

On the 14th May, 1983, a very serious fire broke out in the house of Shri Sonva in village Dhola, Tehsil Jamwa Ramgarh, District Jaipur. His eight months old child was trapped in the blazing house. Shri Sita Ram, a truck driver immediately rushed into the burning house and rescued the child from sure death.

Shri Sita Ram Bagia thus displayed exemplary bravery and courage in saving the life of an eight months old child completely ignoring the danger to his own life.

15. Shri Mirza Ghalib
Constable No. 443,
Armoured Police Lines,
Kota, Rajasthan.

On the 26th March, 1983, a woman slipped into Chhatril-vilas tank and struggling for her life. There was at that time about 34-40 feet of water in the tank and it was full of Kanji grass and once a man is entangled in it, it is very difficult for him to come out of it alive. The person was crying for help. About 400-500 persons who has gathered there could not dare to enter the tank. Constable Mirza Ghalib who was going for his duty saw the huge gathering and reached the site of the incident to know what had happened. On reaching there, he saw a drowning figure at a distance of about 50-60 yards away in the tank. He at once jumped into the tank, reached the drowning figure and saved her from drowning.

Constable Mirza Ghalib thus displayed exemplary courage and promptitude and saved the life of a lady from drowning at the risk of his own life.

16. Shri Mohammed Shakir,
2352/5, Kothi Yakeen Shah,
Topkhana Hazuri, Jaipur,
Rajasthan.

On the 27th November, 1982, Shri Mohammed Shakir alongwith his friends was playing cricket behind Govind Devji temple near Talkatora in Jaipur. All of a sudden he heard cries for help. When they reached the spot, they found that a boat carrying 23 persons has capsized in the Talkatora. Among those who were struggling for their lives, were 10 children and six women. Although many people were gathered there but none took courage to save the drowning persons. The depth of the water at the place of the incident was about 8 to 10 feet deep. Shri Shakir at once jumped into the tank and caught hold of the hair of the two children and brought them to safety. He repeated this act thrice and was able to save the lives of 10 children and 6 women in all. In the rescue operation, Shri Shakir injured his legs. He was taken to M.M.L. Hospital for medical aid.

Shri Mohammed Shakir showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of 10 children and 6 women without caring for the risk involved to his own life.

17. Shri Satyen Karmakar,
Moledubkha, P. P. & Distt. Bankura,
West Bengal.

On the 28th December, 1982, a boy named Shri Kalyan Chakraborty, came to stay with his grand father at Moledubkha, Bankura. He suddenly fell and drowned into the deep well of the house. The well is 46 feet deep and the depth of the water at that time of the incident was about 28 feet from the bottom. All present there were perplexed at the gravity of the situation. On hearing alarming screams, Shri Satyen Karmakar of the same locality rose to the occasion. He got down into the well by clasping the notches in the wall of the well and the pipe of the tube well fitted on the wall. He dived in the water and brought up the boy to the surface of the water and kept him floating. With the help of strong ropes thrown in by the people collected there, he brought the boy outside the well.

Shri Satyen Karmakar displayed courage and promptitude in saving the life of Shri Chakraborty unmindful of the risk involved to his own life.

18. Master Sandeep Patil,
C/o Major J. Patil,
OC 5 Mah Bn NCC,
Kolhapur, Maharashtra.

On the 22nd April, 1983, Shri Harjit Singh, aged 22 years, a non-swimmer, went for swimming in the pool of Municipal Council, Nanded. When he saw others were jumping and diving in the deep side of the pool, he put on a rubber tube on his waist and also dived into the pool. Unfortunately, the rubber tube slipped out from his legs as he dived and he started struggling for his life. Onlookers thought that he was joking. Master Sandeep Patil, who was standing on the bank of the pool, noticed that Shri Harjit Singh had not taken out his head out of water even once for breath and thus gauged the situation. Master Patil immediately jumped and went close to Shri Harjit Singh and made over the tube to him. Shri Harjit Singh clung to the tube in exasperation. Then Master Patil successfully brought him out of the deep water to the bank of the pool.

Master Sandeep Patil displayed courage and promptitude in saving the life of Shri Hanjit Singh from drowning at the risk to his own life.

19. Master Shameel Sharma,
T 187/1, Officers' Enclave, Air Force Station,
Bamrauli, Allahabad.

On the 25th January, 1984, a school bus carrying children of defence personnel of Air Force Station, Bamrauli, Allahabad stopped South of the unmanned railway crossing opposite the Officers' Enclave, Miss Homika Chhatwal of St. Mary's Convent was the first one to proceed towards the railway track to cross over. At that time one goods train was passing through the Northern track. Consequently, she waited and the moment the train cleared the track, stepped on to the southern track, least realising that there was another train approaching the southern track from the opposite direction. Whilst she was in between the rails, she heard the whistle and to her horror she saw a fast approaching train on the same track. Out of sheer fright, she froze on the track. Shameel Sharma, a student of Class IV-B of St. Joseph College, Allahabad, who had also alighted from the same bus, saw the helpless plight of Homika and realising the impending danger regardless of personal safety, dashed to the track and pulled dazed Homika away. As he did so, the train passed away.

Shri Shameel Sharma thus showed exemplary courage, bravery and presence of mind in saving the life of a fellow student exposing himself to great danger.

20. No. 14295146 Signalman Balisetty Munendrudu,
Bihar and Orissa sub-area signal company,
Danapur Cantt-801 503.

On the 8th August, 1982, No. 14295146 Signalman Balisetty Munendrudu when returning home was told by the Regimental Police that a woman had fallen into a canal and was drowning. Signalman Munendrudu rushed to the spot where a crowd had gathered. The depth of the canal where the woman had fallen was approximately 25 feet and the current was fast owing to heavy downpour in the preceding days. Signalman Munendrudu tried to pull the woman by throwing an improvised life line to her but she could not hold on to the life line for long. Signalman Munendrudu without a moment's hesitation jumped into the canal and swam upto the woman. When he reached her, she clutched him taking him down with her. He slapped the woman once to get her out of the shock and then swam back to the bank of the canal along with the woman. Sapped of energy and exhausted, he allowed himself to respire and immediately started resuscitating her by pumping out the excess water swallowed by her.

Signalman Balisetty Munendrudu displayed courage and promptitude in saving the life of a woman from drowning without caring for his life.

21. Shri Sandeep Pawah,
S/o Sqn. Ldr. R. P. Pawah,
No. 25, ED(M), Air Force,
Devlali-422 501.

On the 13th May, 1983, Shri Sandeep Pawah along with his brother and friends went for swimming in Derna river which flows by the Air Force Officers' mess. Some other officers and their children were also swimming at that time in the river. While standing on the bank of the river, Shri Sandeep heard shouts of help, help. A young lady who was standing in the shallow waters shouted 'Sandeep he is drowning'. Sandeep looked around and saw Flying Officer P. K. Magmar struggling to keep his head out of the water. Shri Sandeep at once jumped into the river and reached the spot which was about 40 metres away. By this time, the officer had gone up and down in the water four to five times and was still going down the water when Sandeep after reaching him tried to pull by hair. Unfortunately the officer's hair were short and Sandeep lost the grip. After realising that he could not pull him by hair, Sandeep pushed the officer up from under his arm pits to allow him to breathe. Flying Officer who had not only developed cramps in the legs but also swallowed some water had completely lost control and tried to grab Sandeep. Sandeep immediately sensed the risk in being grabbed by the officer. He after freeing himself kept pushing

up Flying Officer from under the water to ensure that he could breathe. Despite having got tired in the process, Sandeep kept the Officer's head above water till further help arrived and the Flying Officer was brought to the river bank.

Shri Sandeep Pawah thus displayed conspicuous gallantry and coolness under pressure in saving a life from drowning without caring for the risk involved to his life.

22. Shri Shankar Lal Jedia,
S/o Shri Basant Lal,
Chirawa, Distt. Jhunjhunu,
Rajasthan.

On the 21st April, 1981, Shri Shankar Lal Jedia, a resident of a house near Railway Colony, Barmer, Rajasthan, heard the shouts of 'Bachao Bachao' and saw lot of smoke coming out of the Railway Colony School, Barmer. He immediately rushed to the spot and found the School engulfed with fire. All the doors and windows of the school were also on fire. All the students except two of about 8 to 10 years of age escaped. The two entrapped boys were crying for help. No body dared to enter the school and save the children. In the meantime both the boys became unconscious because of the smoke. Shri Jedia picked up courage and rushed into the school through the burning doors and started searching the boys. In spite of fire blazes and smoke, he picked up the boys in his arms and came running out of the school again through the burning doors and thus saved their lives. The boys regained consciousness after receiving first aid.

Shri Shankar Lal Jedia displayed courage and promptitude in saving the lives of two children unmindful of the risk involved to his own life.

23. Shri Jagdev Raj Dutta,
JE Trunks, under AE Trunks,
Jammu.

On the 7th November, 1981, Shri J. R. Dutta, a Junior Engineer, was going for lunch break. He noticed that a child of 2 years has come in front of a vehicle (Telcom J&K Circle Jeep No. JKP 6269) plying on the road. Shri Dutta rushed forward to save the child from being crushed and he succeeded in doing so. Unluckily Shri Dutta was himself run over by the vehicle. The departmental employees extricated him by lifting the vehicle. He was admitted to a State hospital where he got treatment for multiple injuries.

Shri Jagdev Raj Dutta displayed exemplary courage and promptitude in saving the life of a child without caring for the risk involved to his own life.

24. Shri Shantinath Tatoba Karande,
K-90, Themurli Bawan Chawl,
Thakurli Power House, Dombivali (West),
Taluka Kalyan, Distt. Thane,
Maharashtra.

25. Shri Bhupal Bhau Bagane,
Pitra Building No. 2, R. No. 10,
Savakar Road, Dombivali (East),
Taluka Kalyan, Distt. Thane,
Maharashtra.

On the 6th March, 1983, a boy aged ten years while playing fell into the well which was situated in the Municipal Garden in Dombivali (West). The well is 20-25 feet deep with the circumference of about 12 feet. On hearing the incident the father of the boy went running towards the well and jumped into it to save his son. Unfortunately the father did not know swimming and both began shouting for help as they were drowning. Shri Shantinath Tatoba Karande and Shri Bhupal Bhau Bagane, who were sitting in a shop near the well, ran towards the well. They jumped into it and rescued both the father and his son.

Shri Shantinath Tatoba Karande and Shri Bhupal Bhau Bagane displayed courage and promptitude in saving two lives from drowning unmindful of the risk involved to their own lives.

26. Shri Lalu Ram Koli,
Village Matlana, Tehsil Lalsot,
Distt. Jaipur, Rajasthan.

On the 19th July, 1981, the river Morai was in spate. Consequently Matlana Ki Dhani situated on its bank was completely devastated. The houses and trees were submerged in the flood water upto the height of 12 feet. All the 21 persons of the village including Shri Lalu Ram Koli, his wife, three sons and one boy named Bharat Lal Meena (10 years) climbed to the roof of Shiv Mandir to save themselves from the fury of the flood. But unfortunately the Shiv Mandir also collapsed and all the persons on the roof of the Mandir washed away. Shri Koli was a helpless spectator to the death of all his family members. Unable to bear the shock of the death of his family members, he wanted to end his life by going into the gushing water. Suddenly one boy named Bharat Lal Meena caught hold of the corner of dhoti of Shri Koli. Shri Koli saw the innocent looking boy and decided to save him. He lifted the boy on his shoulders and climbed a tree. Holding the boy with one arm and clasping the branch with the other, he remained on the tree for 4 hours. When the flood water receded, Shri Koli came down from the tree and crossed the river with the boy on his shoulders. He thus saved the life of the boy.

Shri Lalu Ram Koli displayed exceptional courage to save the life of the boy unmindful of the risk involved to his own life.

27. Kumari Phoola,
D/o Shri Badri Lal,
Meena resident of village Echer,
Distt. Sawai Madhopur, Rajasthan.

On the 30th August, 1982, Ravi Prakash aged 5 years accompanied her aunt to the banks of Banas river near village Echer. Leaving the child at the river bank to play, she started washing her clothes. After sometime when she looked for the child he was not found there. She started crying. At that time Kumari Phoola and Shrimati Kajori Devi were also present on the bank of the river. On hearing the cries of the lady, Kumari Phoola and Shrimati Kajori Devi started running on the bank of the river in the down-stream direction. Kumari Phoola spotted the drowning child at a distance of about 100 metres in about 10 feet deep water. She at once jumped into the river, caught hold of the child but she could not come back and started drowning. At that time, Smt. Kajori took off her sari and flung it towards Phoola who caught hold of the sari by one hand and the child in other hand. They were pulled to safety by Shrimati Kajori and the aunt of the child.

Kumari Phoola thus displayed courage and promptitude in saving the life of a child from drowning without caring for her own life.

28. Shri Sikal Das alias Siklu,
Khumhar Khore Patti Dhamandhesu,
Distt. Tehri Gharwal,
Uttar Pradesh.

On the 25th November, 1982, Shrimati Kamli wife of Shri Sonu of village Dhaun Dhamandaayu, P. O. Narender Nagar, District Tehri Gharwal climbed a tree on the top of a hill for plucking tree leaves for animals. By chance the branch of the tree broke down and she fell on the top of a bush which was about 100 feet below the hill. Had she not entangled in the bush she would have rolled down and died. Although there were about 300 to 400 people at the place of the incident, none dared to save the lady. At this critical moment one Shri Sikal Das showed exemplary courage and in spite of the fact that there was no other tree near the bush, he somehow climbed the hill and managed to bring the lady on his back to the safety. While descending the hill with the lady on his back there was every possibility of his slipping and in that case death was certain for both of them.

Shri Sikal Das alias Siklu displayed exemplary courage and promptitude in saving the life of a lady at the great risk to his own life.

29. Sainik Ram Krishna Shukla,
C/o District Commandant,
Home Guards, Datia,
Madhya Pradesh.

On the 20th May, 1983, three small children in the age group of two to four were playing near a partially covered septic tank which was 10 feet long, 6 feet wide and 8 feet deep. The tank was full upto the depth of 6 feet with excreta and there was no pure air. One of the boys named Ram Bihari Soni accidentally fell headlong into the tank. The other two boys started crying and shouting for help. Having heard their cries, Sainik Ram Krishna Shukla who was 100 metres away cooking his food, dashed towards the septic tank and noticed that only the toes and the soles of the feet of the child were visible. He immediately jumped into the tank, lifted the unconscious child, started swimming keeping child's head above the level of excreta, muck etc. In the meantime, some other persons also rushed to the spot and took out the child and Sainik Shukla. The blood has started coming out of the nose and mouth of the child. Then the child regained consciousness, Sainik Shukla cleaned him, administered further first aid and then the boy was taken to the hospital.

Apart from the personal risk involved, not many persons would have jumped into the septic tank, which because of its contents and foul stunk, has a repulsive feeling. Sainik Ram Krishna Shukla in utter disregard for his personal safety, displayed exemplary courage in having jumped into the septic tank and managed to save the drowning child.

30. Cadet Premdas Jadhav,
1, Andhra R&V Regiment, NCC R. Nagar,
Hyderabad-30 (Andhra Pradesh).

On the 18th August, 1983, a labourer was while washing the wall of second floor of a Hostel of Andhra Pradesh Agricultural University by perching on the top of an improvised bamboo ladder at a height of 45 feet above the ground. There was sudden cold burst and heavy downpour of rain. Due to heavy downpour the ladder on which the labourer was working slipped, broke in the middle and collapsed. The labourer held on to the projection of the window with his fingers and was dangling precariously shouting frantically for help. Nearby NCC parade was being held and the NCC officers organised a rescue party and attempted to bring the labourer down safely but could not reach him. In the meantime, Cadet Premdas Jadhav who was attending the parade using his own initiative climbed a drain pipe (monkey fashion) which was slippery due to the rains and pulled himself to the level of the labourer. He jumped from the pipe on to the window railings and held the window railing with one hand and simultaneously held the labourer with his other hand just as the labourer was about to let go of his grip on the window projection. He could maintain the balance and could hold the labourer with one hand since the labourer was very thin and physically weak. In the meantime the other Cadets formed a human ladder and some others reached the window shade from the roof and rescued the labourer.

Cadet Premdas Jadhav displayed great courage, initiative and promptitude in saving the life of a labourer in complete disregard to the safety of his own life.

S. NILAKANTAN, Deputy Secretary to the President

MINISTRY OF INDUSTRY

DEPARTMENT OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT

New Delhi, the 27th November 1984

ORDER

No. 14(8)/84-Paper.—In exercise of the powers conferred by clause 9 of the Paper (Regulation of Production) Order, 1978 the Central Government hereby exempts for the period commencing on the 1st April, 1984 and ending on 30th September, 1984 M/s. Punalur Paper Mills, Punalur, Kerala from the requirements of Clause 8 of the said order having regard to the fact that the said mills have suffered heavy financial losses in the immediately preceding three years.

R. C. RAWAL, Director

DIRECTORATE GENERAL OF TECHNICAL
DEVELOPMENT

New Delhi, the September 1984

RESOLUTION

No. CRYO/9(3)/84/DLC/2682 to 2695.—Government of India have decided to constitute a Development Panel for Locks, Safety Locking Systems and Security Equipments with the following composition for a period of two years from the date of issue of the Resolution :

CHAIRMAN

1. Shri P. R. Latey,
Director General (Tech. Development),
D.G.T.D. Udyog Bhavan, New Delhi-110011.

MEMBERS

2. Shri G. Venkataramanan,
Joint Secretary,
Department of Industrial Development,
Udyog Bhavan, New Delhi-110011.
3. Shri D. B. Malik,
Industrial Adviser (Engg.),
D.G.T.D., Udyog Bhavan, New Delhi.
4. Shri Sudershan Singh,
Joint Director, Ministry of Commerce,
Udyog Bhavan, New Delhi-110011.
5. Shri Shailendra Sharma,
Deputy Adviser (Engg.),
Planning Commission, Yojna Bhavan,
Parliament Street, New Delhi-110001.
6. Shri K. S. Lamba,
Deputy Director,
Office of the D.C. (SSI),
Nirman Bhavan, New Delhi-110011.
7. Shri J. L. Chhabra,
Deputy Director General (Inspection),
D.G.S. & D., Jeevantara,
5, Parliament Street,
New Delhi-110001.
8. Shri D. S. Kulkarni,
Senior Engineer,
State Bank of India,
Premises Department Central Office,
P. Box No. 12, Bombay-400 021,
(Maharashtra).
9. Shri S. C. Mehta, Senior Manager (M. M. S. D.)
India Tourism Development Corporation Ltd., New
Delhi House, 3rd Floor, 27, Barakhamba Road,
New Delhi-110001.
10. Shri K. D. Deodhar, Chief Engineer, Taj Palace
Hotel, Sardar Patel Marg, New Delhi-110021.
11. Shri J. N. Godrej, Director, M/s. Godrej & Boyce
Mfg. Co. Pvt. Ltd., Godrej Bhavan, Home Street,
Bombay-400001.
12. Shri D. R. Masani, C/o Association of Indian Engi-
neering Industry, 172, Jor Bagh, New Delhi-110063.
13. Shri W. N. Mairra, President, All India Lock Manu-
facturers Association, Parker Locks Building, Parao
Dubey, Aligarh-202001 (UP).
14. Shri V. K. Bajaj, Aligarh Small Industries Associa-
tion, Morris Bajaj Industries, A-5, Industrial Estate,
Aligarh-202001 (U.P.).
15. Shri V. Amalraj, Secretary, Dindigul Lock Workers
Industrial Co-operative Society, S. R. Mill Road,
Dindigul-624006 (Tamil Nadu).
16. Shri Zafar Alam, M/s. Nery Lock (Regd.), C-7,
Industrial Estate, Aligarh-202001 (UP).
17. Shri A. C. Patel, Partner, M/s. Vaultex Industries,
4/24, Industrial Estate, Gorwa Road, Vadodara-
390016 (Gujarat).
18. Managing Director, M/s. Tiger Hardware & Tools
Ltd., Morris Road Aligarh-202001.

19. Shri Molay Das, Proprietor, Das Lock Mfg. Co.,
16, Mondal Temple Lane, Calcutta-700053 (WB).

Member Secretary

20. Shri M. M. Ali Khan, Development Officer,
D. G.T. D., Udyog Bhavan, New Delhi-110011.

Terms of reference of the panel would be as under :

1. To consider the present stage of Development and future perspectives of the industry, and to recommend measures for its accelerated growth.
2. To evaluate the present level of technology and to forecast future technology needs, specially in respect of reliability, operating efficiency, of locks, safety locking systems and security equipment and improved productivity.
3. To examine the extent to which standardisation has been achieved and evolve specific programme for further rationalisation of locks, safety locking systems and security equipments.
4. To decomment measures for collecting statistics on on past and current imports in sufficient detail, so that this can be used for future development of industry.
5. To evaluate and recommend specific areas of research, design and development.
6. Any other aspects related to the growth of the industry.

ORDER

ORDERED that copy of the Resolution to be communicated to all concerned. ORDERED also that the Resolution to be published in the Gazette of India for general information.

K. C. GANJWAL,
Director (Administration)

MINISTRY OF FOOD & CIVIL SUPPLIES

DEPARTMENT OF CIVIL SUPPLIES

New Delhi, the 27th November 1984

RESOLUTION

Subject :—Re-Constitution of Advisory Committee for the Indian Institute of Legal Metrology, Ranchi.

No. WM-2(5)/84.—In pursuance of rule 8 of the Indian Institute of Legal Metrology Rules, 1980 and in supersession of Ministry of Food and Civil Supplies, Department of Civil Supplies Resolution number WM-9(11)/80 dated the 12th March, 1983 the Central Government hereby re-constitutes the Advisory Committee of the Indian Institute of Legal Metrology, Ranchi consisting of :—

Chairman

1. Secretary to the Government of India,
Department of Civil Supplies,
New Delhi.

Members

2. General Manager,
India Government Mint,
Bombay.
3. Dr. R. G. Kumble, Director
Department of Science and Technology,
New Delhi.
4. Secretary to the Government of India,
Ministry of Law, Justice and Company Affairs
(Legislative Department),
New Delhi.
5. Director,
National Physical Laboratory,
New Delhi.
6. Director of Agriculture,
Govt. of Bihar,
Patna.

7. Controller of Weights & Measures,
Govt. of Himachal Pradesh,
Simla.
 8. Controller of Weights & Measures,
Govt. of Karnataka,
Bangalore.
 9. Controller of Weights and Measures,
Government of Madhya Pradesh,
Bhopal.
 10. Trainee Representative,
Indian Institute of Legal Metrology,
Ranchi.
 11. Director General,
Indian Standards Institution,
New Delhi.
 12. Shri K. S. Lakshminarayan,
Avery India Limited,
New Delhi.
 13. Head,
Department of Education in Science and Mathematics,
National Council of Education Research & Training,
New Delhi.
 14. Head,
Workshop Department,
National Council of Education Research & Training,
New Delhi.
 15. Financial Adviser,
Ministry of Food & Civil Supplies,
New Delhi.
 16. Shri R. P. Wadhwa, Director,
Department of Electronics,
Government of India,
New Delhi.
- Ex-officio Member*
17. Director of Legal Metrology,
Department of Civil Supplies,
New Delhi.
- Ex-officio Convener*
18. Principal,
Indian Institute of Legal Metrology,
Ranchi.

B. K. SINHA, Jt. Secy.

MINISTRY OF HEALTH & FAMILY WELFARE
MCH SECTION

New Delhi, the 19th October 1984

RESOLUTION

No. P.11016/27/84-MCH.—On the expiry of the term of the Advisory Committee of the Countess of Dufferin's Fund as reconstituted *vide* Ministry of Health and Family Welfare Resolution No. P.11016/1/80-MCH dated 30-4-1982 the Government of India is pleased to reconstitute the Committee with immediate effect.

The composition of the reconstituted Committee shall be as follows :—

Chairman

1. Deputy Minister for Health & Family Welfare.

Members

2. Additional Secretary & Commissioner (Family Welfare).
3. Additional Secretary (Health).
4. Representative of the Ministry of Finance.
5. Deputy Director General (Medical) D.G.A.S.
6. Nursing Adviser, Directorate General of Health Services, New Delhi.
7. Principal, Lady Hardinge Medical College & Hospital, New Delhi.
8. Principal, Rajkumari Amrit Kaur College of Nursing, New Delhi.
9. Smt. Monika Das, M.P., 23 Canning Lane, New Delhi.
10. Smt. Sanyogita Rane, M.P., 92 North Avenue, New Delhi.
11. Smt. Kailash Pati, M.P., 32, North Avenue, New Delhi.
12. Assistant Commissioner (MCH) Deptt. of Family Welfare—Members Secretary.

2. The Committee will advise the Central Government in the utilisation and administration of the income from the Countess of Dufferin's Fund.

3. The tenure of the Committee will be two years.

4. The expenditure on T.A. & D.A. of official members shall be met from the source from which their salary is drawn. The T.A. & D.A. of non-official members for attending the meetings of the Committee shall be regulated in accordance with the provision of S.R. 190 and orders of the Government of India thereunder as issued from time to time.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all the State Government/Union Territories. ORDERED further that the Resolution to be published in the Gazette of India for information.

S. K. SUDHAKAR, Jt. Secy.

MINISTRY OF EDUCATION AND CULTURE
(DEPARTMENT OF CULTURE)

New Delhi, the 16th November 1984

RESOLUTION

No. F.3-27/84-CH.5.—It has been decided to constitute an Advisory Committee for the National Museum, New Delhi, to provide guidance on broad questions of policy relating to the working of the Museum. The composition of the Committee shall be as follows :—

Chairman

Prof. Lokesh Chandra.

Members

1. Prof. B. B. Lal
2. Shri K. V. Sounder Rajan
3. Mrs. Devangana Desai
4. Shri R. C. Agrawal
5. Dr. S. C. Kala
6. Prof. Mulk Raj Anand
7. Mrs. Pupul Jayakar

8. Shri Madhavrao Sciindia
9. Prof. K. D. Bajpai
10. Prof. D. P. Agrawal
11. Shri S. R. Rao
12. Prof. Sankho Chaudhary
13. Dr. K. Shivarama Muranth
14. Shri G. R. Santosh
15. Shri Badr-ud-din Tayabji
16. Shri G. K. Arora,

Additional Secretary to P.M.

17. Shri C. L. Anand,
Joint Educational Adviser,
Ministry of Education & Culture
18. Dr. L. P. Sihare,
Director,
National Museum,
New Delhi.
2. The Committee will meet at least once a year.

ORDER

Ordered that the Resolution be published in the Gazette of India for general information

SERLA GREWAL, Secy.

MINISTRY OF ENERGY

DEPARTMENT OF PETROLEUM

New Delhi, the 25th October 1984

ORDER

Subject :—Grant of Petroleum Exploration Licence for Katch area—'D' Structure measuring 687 Sq Kms to ONGC (offshore).

No. O-12012/43/83-Prod.—In exercise of the powers conferred by clause (i) of sub-rule (1) of rule 5 of the Petroleum and Natural Gas Rules, 1959, the Central Government hereby grants to the Oil and Natural Gas Commission, Tel Bhavan, Dehradun (herein after referred to as Commission) a Petroleum Exploration Licence to Prospect for Petroleum for four years from 15-11-83 for Katch area -D- Structure measuring 687 sq. kms, (offshore) the particulars of which are given in Schedule 'A' annexed hereto

The Grant of Licence is subject to the terms and conditions mentioned below :—

- (a) The Exploration Licence should be in respect of Petroleum.
- (b) If any minerals are found during the exploration work, the commission should bring that to the notice of the Central Government with full particulars thereof.
- (c) Royalty at the rates mentioned below shall be charged.
 - (i) Rs. 61/- per metric tonne or such rates as may be fixed by the Central Government from time to time on all crude oil and casing head condensate.
 - (ii) In case of natural gas, at such rates as may be fixed by the Central Government from time to time.

The royalty shall be paid to the Pay & Accounts officer, Department of Petroleum, New Delhi.

- (d) The Commission shall, within the first 30 days of every month, furnish to the Central Government, a full proper return showing the quantity and gross value of all crude oil, casing head condensate and natural gas obtained during the preceding month in pursuance of the licence. The return shall be in the form given in Schedule 'B' annexed hereto.
- (e) The Commission shall deposit a sum of Rs. 6000/- as security as required by rule 11 of the PNG Rules, 1959.
- (f) The Commission shall pay every year in advance a fee in respect of the licence calculated at the following rates for each square Kilometer of part thereof covered by the licence.
 - (i) Rs. 4/- for the first year of the licence;
 - (ii) Rs. 20/- for the second year of the licence;
 - (iii) Rs. 100/- for the third year of the licence;
 - (iv) Rs. 200/- for the fourth year of the licence;
 - (v) Rs. 300/- for the first and second year of renewal.
- (g) The Commission shall be at liberty to determine the relinquishing of any part of the area covered by the exploration licence by giving not less than two month's notice in writing to the Central Government as required by sub-rule (3) of the rule 11 of the Petroleum & Natural Gas Rules, 1959.
- (h) The Commission shall immediately on demand submit to Central Government confidentially a full report of the geological data of all the minerals found during the exploration of oil and natural gas and shall submit without fail every six months the results of all operations, boring and exploration to the Central Government.
- (i) The Commission shall take preventive measures against the hazard of fire under sea bed and/or on the surface and shall keep such equipment, supplies and means to extinguish the fire at all times and shall pay such compensation to third party and/or Government as may be determined in case of damage due to the fire.
- (j) This exploration licence shall be subject to the provisions of the Oil Fields (Regulation and Development Act, 1948 (53 of 1948) and the Petroleum and Natural Gas Rules 1959.
- (k) The Commission shall execute a deed of the Petroleum Exploration Licence in the form applicable to offshore areas as approved by the Central Government.
- (l) The Commission should render, Bathymetric, bottom samples, Current and magnetic data collected during the drilling/exploration operations/survey, to Ministry of Defence Naval Headquarters in the usual manner.
- (m) Since the Kutch Area 'D' Structure is very close to the median line between India and Pakistan, ONGC should exercise utmost care and caution whilst surveying this area so that ONGC's vessels do not stray across the West of the Median line to avoid embarrassment to the Government.

SCEDHULE 'A'

Geographical co-ordinates of KD structure area measuring 687 Sq. kms (offshore)—PEL to Oil & Natural Gas Commission.

Point	Longitude	Latitude
'A'	67° 58' 41"	23° 30'
'B'	68° 13'	23° 30'
'C'	67° 58' 49"	23° 14' 30"
'D'	68° 12' 50"	23° 14' 10"

SCHEDULE 'B'

Monthly return of crude oil, casing-head condensate and natural gas produced and value thereof,

Petroleum Exploration Licence for

Area

Month and Year

A.—Crude Oil

Total No. of Metric Tonnes obtained	No. of Metric Tonnes unavoidably lost or returned to natural reservoir	No. of Metric Tonnes used for purposes of petroleum exploration approved by the Central Government	No. of Metric Tonnes obtained less columns 2 and 3	Remarks
1	2	3	4	5

B.—Casing head condensate

Total number of Metric Tonnes obtained	No. of Metric Tonnes unavoidably lost or returned to natural reservoir	No. of Metric Tonnes used for purposes of petroleum exploration approved by the Central Government	No. of Metric Tonnes obtained less columns 2 & 3	Remarks
1	2	3	4	5

C.—Natural Gas

Total number of cubic metres obtained	Number of cubic metres unavoidably lost or returned to natural reservoir	Number of cubic metres used for purposes of petroleum exploration approved by the Central Government	Number of cubic metres obtained less columns 2 & 3	Remarks
1	2	3	4	5

I, Shri _____ do hereby solemnly and sincerely declare
 (and affirm that the information in this return is true and correct in every particular and make this solemn declaration conscientiously
 believing the same to be true.

(Signature)

By order in the name of the President of India.

P. K. RAJAGOPALAN, Desk Officer